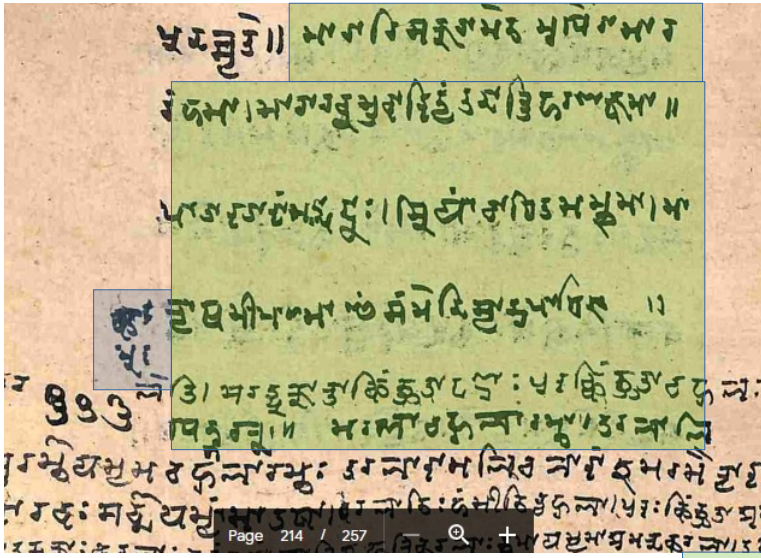
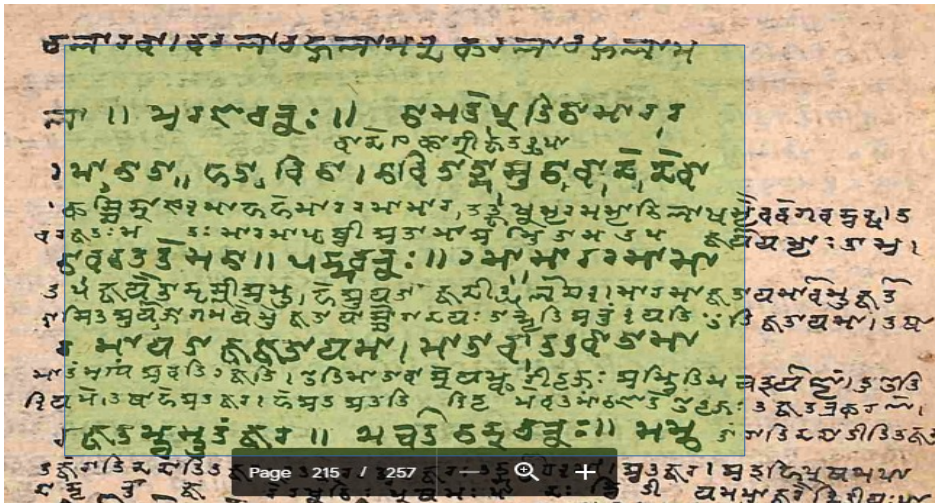




माता नतानां सङ्घट्टः श्रियां बाधितसम्भ्रमा।
 मान्याऽथ सीमा रामाणां, शं मे दिश्यादुमादिमा॥३८५॥
 (खड्गबन्धः)
 सरला बहुलारम्भतरलालिबलारवा।
 वारलाबहुलामन्दकरलाबहुलामला॥३८६॥
 (मुरजबन्धः)
 भासते प्रतिभासार रसाभाताहता विभा।
 भावितात्मा, शुभा वादे, देवाभा बत ते सभा॥३८७॥
 (पद्मबन्धः)



Ref: <https://archive.org/details/kavya-prakash-with-udyota-and-pradeep-sampurnananda-sanskrit-university/page/n473/mode/2up>

उक्तं यद् उक्तं किं उक्तं

यथा ॥ मधुसूत उक्तं किं उक्तं

मयैकं मधुसूत उक्तं किं उक्तं

मधुसूत उक्तं किं उक्तं

मधुसूत उक्तं किं उक्तं

मधुसूत उक्तं किं उक्तं

[illegible]

ठिडुपलकीकलभभगणभुं
विणय॥मइभरेषरभपिक्रम
मीतिमृजैवः॥यषर॥द्वि
५ डूपलीकरी २४ १८ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०
विष्णुः प्रियविरः पूयठ
नपरस्यसेउमः। कभपणल
वंभमपहृभिहृभिभारिवि

मपीडिकृमा॥ममुनमुपयं

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

प्रवावेमवकुसुममिहः उकु कुज ३३३
 किं नो हयइ मिउहैरप्रकष्टुष्टुवेउकुभरः ॥ मइहेकउउवे ममाभमिहमा ।
 उहयउ ममाभमिहमिडि ॥
 उपकउगी लं महुयवे भपु मिडिहहप्र सीधे ॥

जवेरकुटिलउभुछविः पउवः ॥

मइमपलकैरुतः प्रचंकुटिलउ

मुडिवसुमा ॥ मकुमकुममाभंय

कुहैडि ॥ वि लयभुमभु
 र। ममाभं कुउकेवि मिडि कि नउज। मइ उकु कुहैके म माभैरु
 उउकु कुमभं गभुडे उ व ॥ महु पिभुममेलमजविधमे
 डिउकु मगीकुकरः

मीमडिनीरंरुमि, भुउंरु पुडिम

सी

१११

नपयणिमिडिरेणरिवालेदिउः

मइरुहैडि। महुउरुहय महुहैडिः उह मवेरुम ममाहदि पमविपुथे
 सुगी डि कवे नेमिडी ॥ महुमुउउ उहदि कवे ममाभः हः उहकु
 मकु ममाभहमा ॥ उडिलयउ महुउकरये वृष्ट ॥

मङ्गीलं वरुणपदं भिषगु ॥ किमिति ॥
 मङ्गीलं गङ्गापदं किमिति ॥ उभं कुरु ॥ १॥
 कुरु मङ्गीलं वरुणपदं ॥ उभं कुरु ॥
 मङ्गीलं गङ्गापदं ॥ उभं कुरु ॥
 उभं कुरु ॥ उभं कुरु ॥
 उभं कुरु ॥ उभं कुरु ॥

मङ्गीलं वरुणपदं भिषगु ॥ किमिति ॥
 मङ्गीलं गङ्गापदं किमिति ॥ उभं कुरु ॥
 मङ्गीलं वरुणपदं भिषगु ॥ किमिति ॥
 मङ्गीलं गङ्गापदं किमिति ॥ उभं कुरु ॥
 मङ्गीलं वरुणपदं भिषगु ॥ किमिति ॥
 मङ्गीलं गङ्गापदं किमिति ॥ उभं कुरु ॥

लं यत्र वरुणपदं भिषगु ॥
 उभं कुरु ॥ यत्र ॥ किमिति ॥
 मङ्गीलं वरुणपदं भिषगु ॥

लभभात्रभद्रहृदयराषंकु

र ता क हू उ मा वि णि य दुर
 चार ल धी डि वि न भु छ । म न म मु मे ड प भा ॥ अ उ प ण ग डं व
 स ठ ल हा ड र ज कि पू मे
 वै उ ग उ ट क ण क व कु डि ॥ इ गु ल य रा खं कि मि डि न प मु मि ॥
 सु य म जः । कि पु उ भु म
 वि पि र भु र प र न मे क र
 वि रु ज उ हु वि न भु उ
 वा डा ऊ पी वि न भुः म हू
 ले ड प र डं प र भु र व
 वि रि पा ज र म वि
 डि र व य पी डि
 च र ये रे क मि डि ३३-
 उ डि उ डु प गी क क रः क क र ॥ ३४ ॥ ए र क ड ॥ ग डि उं ए उ ग डं सु उः भि उ
 र क र उं र क र मि ड रः ॥ ३५ ॥ र क र क वि डु र व उ ण वे कं ॥ क मि डु क र क र उं र
 नि म डं प्र डी य उ। ण की क डं ॥ ३६ ॥ ए र क ड ॥ म ग प क र डि। सु र व र मि र व उ
 भु डु मि डि र क रं ॥ म ग प क र वि र डै। म र व र क ड म ड डिः र वि र क र क र
 म र ड र क र उ र ग र म र व र वि र उ डि र क रः उ डि क र प्र सी य

परायणकेशरिउकुल्लरभद्रभद्र

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

मर्मव॥ प्रदुर्गीयः पद्मेवह

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

कर्मसु। प्रपन्नसु। उद्विग्नसु। मन्त्रसु। विविधसु।
 वेद्युः। उद्विग्नसु। मन्त्रसु। विविधसु।
 कर्मसु। प्रपन्नसु। उद्विग्नसु। मन्त्रसु। विविधसु।

[The following text is heavily obscured by bleed-through from the reverse side of the manuscript page. It appears to be a continuation of the Sanskrit text.]

नमो भित्तो गौतमः कथितं गमयन्तु भद्रं दुःखं च नृणां सुखं च ।
 नमो भित्तो गौतमः कथितं गमयन्तु भद्रं दुःखं च नृणां सुखं च ।
 नमो भित्तो गौतमः कथितं गमयन्तु भद्रं दुःखं च नृणां सुखं च ।
 नमो भित्तो गौतमः कथितं गमयन्तु भद्रं दुःखं च नृणां सुखं च ।
 नमो भित्तो गौतमः कथितं गमयन्तु भद्रं दुःखं च नृणां सुखं च ।

इति चरकि प्रिम यति विमि उं
 मरुतु ग ई क व ह य सि उ पि व ह म ज य डि ल ग मि डि उ डि ग मि उं सी डि
 उमु उ र मि र उ ह ह हः सी नि य जे ग कु
 ग म मि उ मि डि ग उ र भु पि च भु भु पि ग उ

की तिः ॥ अ उ वि मि उं उ मु डि अ उ
 प ड उ डि भ म डि के ॥ उ डि वि ह ग म म प ग वि डि उ उ उ डि प डी डिः
 उ उ उ ल की भ उ प म य डी डि वि उ डि उ
 क रः

म र व मे भु क डि भ क वि उ म उ ल म ॥ म ली ग मि भ र
 भ मि उ उ उ उ सी दि मे भ म मि क र म ॥ उ म उ म क म ह रः उ उ उ
 म उ क र व मि उ उ उ उ म उ उ यं भ वि भ म क र उ उ
 क म उ पि म क र व क वि भ य ग वि य म उ ॥ अ उ म उ ल व क र मः
 म र म र व सी उं वि मे भ म पि वि मे भु प ग डि डि क र प री य

मकुउप्रवः परः॥ गवम मुका
सुव... हैर... उ दि विमेष...
दिपुप्रमिमुहकुकिमेष... मिं

कन...॥ वगुः पूरुमः पूमुव

यश्यव...॥ रषेरिमयनिय

उविमिगममुहउदेउनिम

वगुः पूरुमः पूमुव उदिमिहं यमुउउउमुहउहउमुहउ...॥ उहउमुहउः
पूरुमहउयषा ॥ रषेरि पियउ, कुल... उहउमुहउ... यश्य
मुहउउउ उिगमेः श्री मुहउः पूमुव रिमापियउउहउिउउकुल...
पूरुमि ममुसा ॥ ३३३ सवकुपंनउः परंकमुउरंम
पूरुमिउममुहउि ३३३
मुहउरिमापिउि यकुः यः ॥ उ उिहउपूरुमि ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

विषये पूरु उत एव परम सुभव

नमोवापूयंगंविनारुधः। उषः

दि॥ उ० उ० वि० उ० मु० मु०

वामुनेतिम, मन्मडुं यविपडुं

श्री
९३३

मकडभेककुपडा॥ सुइरकुपवसु

मेरीडियमिडियेउडमपमउम

डिपमिडः मावकुंऊउउउये

पूडिठमभनः पूडीडिंभुगयेड

भापभीकिडुंवेडिउभूहयेवकुभपिडः

यवव॥ चनेठिगुंभापलिपु

यवमउपुमसूभाडिवडिउंउ

कैमिदुमकयउं डडि। डडिपडमहयु, भजं कुचडि मपडमहयुकुडुयं।
मपड मा॥ मलीहडः पडवडिपमपिमु भिहं कुचडि मपडमहयुकुडुयं।
मपडमहयुकुडुयं। पडमहयुकुडुयं। पडमहयुकुडुयं। पडमहयुकुडुयं।

[illegible]

मलीह ल'भविमपम ॥ अउपटायह उं उं डि मशपहपुठपुम
पि उं भिवपह उं डि मपविरक ॥ मपहमह पयि कहे पउमहपयिगाउ
मलीह उं पहवउपीडियुभा अउ हः कः मडिपहक

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

इममभितरेदिम इमी ममभउमर देवमा ॥

महपिप्रइकहकुपेप्रपहेमयेदेडे

मृषपहप्रइमहयेः कषं
पहयउपहयउमेकउ
प्रतिपाममभइहदिडिह
मः उडिकहप्रदीपे ॥
पहयकुपहगुप्रइमह
मरुमंयषा ॥ मदीह
उडिप्रइवउ उडिप्रपह
वउ उडिवकुममिउम ॥
उमृइकिमिडिमेधः

मिडिकेसिहमऊयउ ॥ विपमिठिह

वहुविमंमकयहापप्रपउमय उहमगे

डिःरियउमप्रउरिययउमगी

यत्रपमंरुपमियः ॥ मृइममनह

पहयहम ॥ उमठिहवः कुनउरि

विपमउडि ॥ मृइविप्रचः पमृवः प्रचमः पमृवः उहपमनह
हगुप्रइमहं मेध उहः ॥ ५ पा नपउ उहउ उमृपहयउममगी
यविहकुमिडिपहयह हगुप्रइमहं मेध उ डिहयहमहं कगीहकु
मृइहहहहहह

उपगच्छति नष्टः समंभः ॥ ३३४

मरमु॥ कश्चिद्वीलारलीतिव

भउविमपुमउवउमठरिम्पु

काष्ठिकम्पमानाष्टिक

मम पुमिउमं पठरीवभा ॥ ग

दत्तं भद्रं पश्यन्महिलं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

हैमप्रभातिउंछायाम्भुक्तं
मगकुलंरैभकुमहृष्टु।विभुः

वियउंवरुपतिनिभुभुक्ति
पञ्चलेविभुतिनरतामिहंम
मिधिलहृष्टुमभुष्टुः॥अउरु
कष्ट॥विभुष्टुमभुष्टुमकरवरा
भुभुक्तंमिहृष्टुभुभु॥अकलिउउ

मउउपमुलेरीहृष्टुमभुष्टु
मउवल्मभुभुष्टुमभुष्टु
उरीहृष्टु॥अमकुम॥अरुम
मउउमभुष्टुमभुष्टुमभुष्टु
मउउमभुष्टुमभुष्टुमभुष्टु
मउउमभुष्टुमभुष्टुमभुष्टु
मउउमभुष्टुमभुष्टुमभुष्टु
मउउमभुष्टुमभुष्टुमभुष्टु
मउउमभुष्टुमभुष्टुमभुष्टु
मउउमभुष्टुमभुष्टुमभुष्टु

भभुएवीरप्रविभिवमैरिणवदि

उधममप्रउरपमुरवठिठरु

वडि।मठिरवणमिहमदक

रुमकुपठगुप्ररुमभुएरु
गल्लयषा॥ यषाप्रकलि
डेडि।प्रकलिउः उपमुएवीरुः
प्रभिमगुनहुंयभमउषा
उभिममैरिणिल्लुडुडि
एउउमहुंउरु
विप्रहुंउरुएरु श्री
कीडि।विणैमवि १३१५
पमप्रउमकनहुंहुंयकगल्लमउदहुंरुंनरंमुपुमीमभमु
हाप्रकलिडेडि।प्रविणैरुहिरुडुः भभुएहुंयल्लि।विहैरु
ममैकगउधगुल्लयप्रउमुपमयेनहुंल्लेडिहुंयमप्रउपमै
ममहुंल्लेडिप्रचंरुहुंयप्रउमुकभितिरुमभुठगुप्रमहुंयः ॥

प्रचभारुष्टपसुहृषोऽरुगप्ररुभहंयसउवेडि

उगमिहृभिहृहृयभिरभयव

जंरुहृउमहृिहृविभरुडि

दिभगहृवहृभिहृमत्रयभुभ

भिहृयभगल्लुहृमगीकगीधि

मृहृभभिहृयभगल्लुहृिडिप्रचंरुहृभाउर ॥ कृभभमहृभिहृदिहृमृहृव
मृहृभिहृभिहृप्रचंरुहृपसुहृिहृ प्रचभारुहृदिडि॥ ॥
मवैचिरुगल्लुहृहृहृहृहृहृहृ

मल्लुडिहृिहृ ॥ हृहृहृहृविहृभु
हृमहृ

उचभहृहृहृिहृहृहृिहृहृ

ॐ नमः शिवाय विष्णुपिडुगभाम

ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਤਿਹਾ ਸੁਖੀ ॥ ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

व तु भ र क न भुं क क ह भ पुं क

ਮੁਸਿਕਿਸੇਖੁ ਮੁਦਿਸੇਖੁ ਅਧਿ

कमुमिदुति। विमलं लक्ष्म

महर्षिप्रबंधुषा श्री १५

ਦਿਵਾਨੀ ੧੭੩੩

३३८

५६ : ये नः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

कृष्णकला आनन्दनन्दन
नन्दनन्दन

मृगशिरसः २६२ मृगशिरसः २६२ मृगशिरसः २६२

ला ४३: कौतुमता वा विहृयः पुनः
 - विहृयः पुनः विहृयः पुनः विहृयः

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

CC-0. In P

भा॥ अविहमनः॥ मेयड॥ स्वयं

॥ गडंभपूडिमेगरीयडुंभमगम

प्रऊनयाकपालिनः कलशभाक

... ॥ अथाहं गङ्गां विदुः ॥ पुष्पं केशं
... ॥ अथाहं गङ्गां विदुः ॥ पुष्पं केशं

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥
 श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

Public Domain. Digitized by eGangotri

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

...

३५८० नैपि पुत्रिया सुभा वमं

रगणुडडपुपूः रममङ्गडाः

पुनरुक्तवा ॥ मरु मपुयभा

मणदिः पु नरुङ्गभा लविधु नै ममम

मियममउविधु न मरमा म

रभृदुकाभावकडिवरुमान

परिमनमा प्रमां डपडाभ

रपरिणयङ्गेरमकडां मकक

श्री
७२०

वृद्धेभिमु रिडमपुगयापुन

रमयः कषं कडां मु रिडममिगकमिडे
नकहृष्टेभि
रमयः पुडि
डः मकि
नभाः कि
रमयः कषं कडां मु रिडममिगकमिडे
नकहृष्टेभि
रमयः पुडि
डः मकि
नभाः कि
रमयः कषं कडां मु रिडममिगकमिडे
नकहृष्टेभि
रमयः पुडि
डः मकि
नभाः कि

मृदु यामं कदि न सीरं मुकुभा वि मिड मपुडु कमान इयवडी ह गडी मम
कं व कडि ड गही गकु प ररुग मिड कष मिड क हुर डु मव कव डु ड
यामा दिडपुड लं मपुडि पषगा वडी मपुडु व कडि ड मपुडि पषिडि
कषं पुमव कव डि डडि विरुडि डः मम मपुडु रै गपि कु मे रै व डी यड डडि कव
ममिमे लपड ल मरुडु ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पुत्रिपषगावदति, उमेयप

गितिउः कषंयमवाठवतीतिम

मयकषुः

दूपाजः॥ एगतिरयिरभुते

ठादाववचकलमयः पूढ

तिमपुगः भतुवतेममेमय

श्री

१२७ त्रिये, मभतुयमियंयाउलि

पुः महीनकिनीष्टि पृथुः

ਪ੍ਰਕ੍ਰਿਤ: ੧੦੫ ਸੁਨੀਏ ੮੫

दृष्टिपुत्रे पुत्रकपुत्रे पुत्रि

[illegible]

३३

ਪ੍ਰਸੰਨ੍ਯੁਕਤਿ ਖੰਡਿਤਿ ॥ ਧ੍ਰੁਵਾਃ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

७५३
वल्गुल्लमहकुमुकेनचरि

गिद्धकृष्णगणिकिनीदिपदक

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ਪ੍ਰਾਨਪਿ ਵਿਸ਼ਵ ਲਭਤਾ ॥ ੩੩ ॥
 ॥ ੩੩ ॥ ੩੩ ॥ ੩੩ ॥

[illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ममगावाह
भा।युक्त ५३ दिनेषोक्तिः ५३

कईक शैकुजधुपराकुपा

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

५६५/८४३१६७३/१२५
५६५/८४३१६७३/१२५

रव ५ हुक. को नु पु फा न
- वि म म म म म म

३५३ विष्टापुर मरन

[Faint bleed-through text from the reverse side of the page]

वकुपुत्रकुंडयवा ॥ भडभितुमिषडमल्लन'ल्लनरि
मृष्टेडि॥ मृष्टलंमभुमे
केरुयभुदकम उहकिरु कवमिगिडिमेकुमठीमकिमीदि
जेरुवरकुनेदुमभविपुडंमभागादभासदुहीयदीःभुयुक्तक
मिहुव लशजमुधकउगीलं वमिडिकिमीदिपल्लुडः ५३
मरिधुयेल्लरिगिरेमृष्ट
चैभाष्टेमउलवपुयेल्लमहुगरेधडा रडिडेयंयेधःकमिडुम
रुष्टापिवमरेपुत्रकुडउमुक्तः॥ यष'र'॥ मृष्टल'वली
मदल'मभुष्टु नेडिमुपुष्टी मृष्टल'वलीमुहिम नीरुमुनिडिउ
ल्लरिगिरेमभुकुलेहप यःपुडिउल'ल्लरिः३५३ः मृष्टमभ
पुक्तमिह'कः ॥ उडि मृष्टल'वलील'ल्लरु'चयम
कहपुसीपे श्री पिडिडि'ल्लर'॥ मृष्टल'वलील'ल्लरु'उडिमु
न कुंडह कुः मृष्टल'वलील'ल्लरु'उडिमु
३१३ वेम'र'प'मुड'मि'म'म'पिउ उरुपा
म'कःपु'र'कुः उडि'ल्लरु'म'ह'उ'क'ग'ह'ल्ल' ॥

गिगुमैभवण्नीसुराभा, क

लालंमभूमैवृत्तपमभं
कउवम्

भालुकरिउमङ्कउउमपवि

अयवदतिरप्रंकेयष्ट

वृक्षमवद्विमिष्टमष्टप्रक
वृक्षमः ॥ अउमउउपमव

हाउः ॥ उपलरउरिउवृष्ट

मधूमैमदलं यष कृपनेडि। अउमउउवउउमउउकिः विमृ
यउवमृमिष्टमृष्टवममिउडिउमैवृक्षः मम इउकेउडिउमृष्टमउमैवः
मममृष्टवमृष्टममिउडिउमैवृक्षः मम इउकेउडिउमृष्टमउमैवः

कौमुदुमरैदुगुरेकिरेवशुभेडिकभुगुष्टाष्टपष्टतः श्रुतिधायक
 मगधभुपे लोभन सुष्टमेधायक यमिष्टकः उपपदवरे लोभिन
 वेपिमेधायक ॥ ५ डिउकुपगीहृत्कः

रथीषडैकुवविष्णुयउगङ्ग

मदेनमभा

कुधकडवीले मविरेपे मउकुवममलमभा ॥ मउम
 भुडीडिः मकुमयेकुगेवेडि ५ उपगी हृत्क ममुकु निपिउभाभीड ॥
 निहृष्टायभा ॥ ५ भूमः उकुष्टपुडिरेमष्टायः ॥ भुपि
 ५ भूः कुमः ५ भूकुं मरुमभु भुपिडिनिहृडि । भुपिमिहृमये मवीडि
 लेकुमाभुं विनहृकुं उशकुं डियावरमंरिकएरः भुपिमि
 यष ॥ कुप जेडि । मउम
 म्देदिहृमंवेडिलोकिः

कुमः गुनममकु लप उवरदंकिमपैडिउ, उरयिभा
 जेमरेमिहृजव श्रीकुमु सुदगल मशुभुमकुष्टेडि लयकु
 यषाभुिउपवकु मेवि भुउभाकरकुचुगं, वरिउभुमम
 वरिउउहृकुं ५ म ५ म ॥ निडीयेउ मभुविनकुयष ॥
 कुमविहृ लषकुं गमउने मभि मरेभिउम लकुडिदिनकुले
 उमि मपि कुं मलिरे ॥ ५ इदि सुप्रवहृमभु लकुडिदिनकुले
 कुकहृपुटीपे ॥ गुष्टे गुममभुवः मवेदुगुरेकिपुडिपादिउदिमभिः
 म ॥ यकुं ॥ गुष्टेदिमभिभु। पमवेदकष्टुडे। वेदुगुरेकिमभुले।
 डिहृवेवदिठामिभुडि। मरिहृकुं उदमं मभिभि उददिमगुष्टदिमि
 डिः पवमउकुधकड मसीनवकुकिहृउमकुकिहृलिउदिहृदि
 कुपकेमभा यषपष्टुडे डिहृहृपुटीपे।

११ प्रवेनेकपवपुडीं गुभुमिहृत्तं भुपिडि यवमिहृत्तं दैवतं भुमिहृत्तं
कृष्णं गुभुमिहृत्तं मण्डलं कुत्तुं मण्डलं गुभुमिहृत्तं मण्डलं गुभुमिहृत्तं
मण्डलं गुभुमिहृत्तं मण्डलं गुभुमिहृत्तं मण्डलं गुभुमिहृत्तं ॥

उदयप्रविभुगय
रुद्रयकुत्तुमा ॥ मण्डलं गुभुमिहृत्तं ॥
मण्डलं गुभुमिहृत्तं मण्डलं गुभुमिहृत्तं मण्डलं गुभुमिहृत्तं
मण्डलं गुभुमिहृत्तं ॥ मण्डलं गुभुमिहृत्तं ॥

कुठारमण्डलः ॥ मण्डलं गुभुमिहृत्तं ॥
मण्डलं गुभुमिहृत्तं मण्डलं गुभुमिहृत्तं मण्डलं गुभुमिहृत्तं
मण्डलं गुभुमिहृत्तं ॥ मण्डलं गुभुमिहृत्तं ॥

मण्डलं गुभुमिहृत्तं ॥ मण्डलं गुभुमिहृत्तं ॥
मण्डलं गुभुमिहृत्तं मण्डलं गुभुमिहृत्तं मण्डलं गुभुमिहृत्तं
मण्डलं गुभुमिहृत्तं ॥ मण्डलं गुभुमिहृत्तं ॥

मण्डलं गुभुमिहृत्तं ॥ मण्डलं गुभुमिहृत्तं ॥
मण्डलं गुभुमिहृत्तं मण्डलं गुभुमिहृत्तं मण्डलं गुभुमिहृत्तं
मण्डलं गुभुमिहृत्तं ॥ मण्डलं गुभुमिहृत्तं ॥

मण्डलं गुभुमिहृत्तं ॥ मण्डलं गुभुमिहृत्तं ॥
मण्डलं गुभुमिहृत्तं मण्डलं गुभुमिहृत्तं मण्डलं गुभुमिहृत्तं
मण्डलं गुभुमिहृत्तं ॥ मण्डलं गुभुमिहृत्तं ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

परमं भुंक्तु उवा, उवाप्रीहण

ॐ करकमलभुलेदिदिदिओ

प्रश्नकभष्टगुंलेकप्रभूमि

मा॥ उपपरिभरंगे रुद्रः प

विहङ्गप्रभः सरस्वती

भानुवसूक्तिरुद्धाम

मुहं उं कं कं मिहं प्र चित्तं मुहं नैकं कवि प्रमिहं विरुहं उपम
 विमं मिहं मिहं मिहं मिहं मिहं मिहं मिहं मिहं मिहं मिहं मिहं
 उपमं मिहं मिहं मिहं मिहं मिहं मिहं मिहं मिहं मिहं मिहं
 उं नैकं उं प्रमिहं मिहं मिहं मिहं मिहं मिहं मिहं मिहं मिहं मिहं
 उं ॥ मिहं मिहं मिहं मिहं मिहं मिहं मिहं मिहं मिहं मिहं

उदधि विदि उं उं मकः कय

पिहं उं मयः मयः मयः मयः

मयः मयः मयः मयः ॥ पा

मयः मयः मयः मयः

मयः मयः मयः मयः

मयः ॥ मिहं मिहं मिहं मिहं

कयः मयः मयः मयः

श्री
 १२०

मिधैगंयं गुंगउमुभउसिपुः उरु

उठवउकीतिः केरापृगीयउयरे

माप्रियगुरुमगाभुजासङ्कत

वामिसुठपूरः ॥ अउभुपि

कीतिहृद्वदुकासुपाकीषि

उडिलेकविठसुभपिकुविपू

मिधैगंयं गुंगउमुभउसिपुः ॥ मरुयुध

कैमदीमनमिसुपुहडलेमि
भाउमुअडपीडियमः धरुडीम
मअडुममअडुमिअडुमि
वडुकरिप्रमिडिः कगामा ॥
उडिलेयउमहैडकमे ॥

महेश्वरभूषण। पञ्चदशकलेदिवं

विनीषिष्टं, भक्तलं वभं वः ॥

०५५ मभुविनदु मभेद वलभा

वविणविमभुलि, ह्यमपुमभु

लिडिय ॥ गूढपगगं विमभुं

०५५ मभुविनदु मभेद वलभा

मभुविनदु मभेद वलभा

मभुविनदु मभेद वलभा

मभुविनदु मभेद वलभा

मभुविनदु मभेद वलभा

मभुविनदु मभेद वलभा

मभुविनदु मभेद वलभा

मभुविनदु मभेद वलभा

अक्ष

ਪਰਿਵਾਰ ਮੁਖੀ

ਯੋਗ ਸਾਧਨ ਵਿਨਿਸ਼ੇਧ ਪਾਲੇ ਯ
ਥਾ॥ ਬ੍ਰਹ੍ਮਾਣ੍ਦਿ ਯਮ ਨਿਯਮ

ममभूट नृपराजपुत्र
ममभूट नृपराजपुत्र
पतिनीलमहमः कीलन

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
भक्तिः उद्यतः भविष्यति मंथ

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ਸਿੰਘਮਤਿ ਪ੍ਰਤਪ: ਸ੍ਵਾਧਿਯੇਸੁ

१५५५ कृष्ण विनिवृत्तः भुक्ति
१५५५ १५५५ १५५५ १५५५ १५५५

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

यमः सुविप्रयामं पूषे नमि

१३ कृष्णचक्रं च उद्दिष्टम्

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवा
दः ॥ १ ॥ अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे
संग्रामस्थे मया दृष्टोऽसौ पाण्डव ॥ १ ॥

इति उक्तं अथ उक्तं विना नानु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥

मभापि गिडिम हमाभु विगैः विउ

१५५: विहृति संसृजभाइभाकिटी।

निचक्रुः कडिटेनेमंप्रल्लः ॥ उडिल्लयउमल्लुकगयेचापु॥
मुदें मइभक्तिमपीयसुभमंप्रल्लउद्युगमरूपहैवप्रकिटगेमाभुदिन
५॥ दिवेकण्डितः ५५ विठ्ठलविष्णुगुरुभाद्रिकृपः मंप्रल्लउद्योगेः
पञ्चदशभालभुभक्तपेमंप्रल्लउद्योगः ५५ भक्तिः रडिवेकण्डित
उभाइल्लभडिभक्तिमितिद्योगमाभुविनहुं वंडरगादिमाभुवि
निधुदकीयः ॥ उडिकष्टपदीपे ॥

पुत्रिंभमापिष्टमोतिम

गुह्यमिदं प्रोक्तुं विरुद्धं भक्त्या हीनम्

श्रीनमो भगवते वासुदेवाय चिभक्तः॥ अथ विवेकप्राप्तिः मं
 भा॥ मित्रि सुक्तिः उभा
 भविष्यत्तुल्यदिग्दशमं पूर्य पूर्यतः पञ्चमं पूर्यतः, उउदि
 उमभाणि सुमेविष्टा यूपे महं भुक्तिः
 कामलाः विष्टुजै गितिष्ठ भक्तिः ननु विवेकप्राप्तिः एवं वि
 द्यामइ, गम, लक्ष्मीप्रद।
 हस्तदिशिः॥ उउतिष्ठ
 पद्मिनीकृतः॥ कृष्ण
 पुनश्च सुमेविष्टा प्राप्ता ॥

श्री

३२३

प्रापुः शिवः सकलकामदु

पञ्चउक्तिं, रुडं पञ्चमिगमिदिसि

ସୁକରାବଳ ମନ୍ତ୍ର ଶାସ୍ତ୍ର ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ

मठः पूरतिगवमतामविषा
मिता ॥ यइत्रलिपिताकमेव

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रीकृष्ण उवाच ॥
 दृष्ट्वा तु पाण्डुपुत्रोत्तमायुधं धनुर्धरा ॥
 तस्यैव तनुमिदं धनुर्धरांश्चतुर्धरा ॥
 अथ श्रीकृष्ण उवाच ॥
 दृष्ट्वा तु पाण्डुपुत्रोत्तमायुधं धनुर्धरा ॥
 तस्यैव तनुमिदं धनुर्धरांश्चतुर्धरा ॥

निगिलं रिद्धं मे उद्धिपु
कृष्ण उद्योगिकन्दरमपितु

[illegible][illegible]

महोत्तरः दक्षिणदिगवन्निर्गच्छति।
 त्रिकणपदुक्तिमुभयमेवपरिहृत्यमेवमेव
 न च यथा। सुभाभिदि॥ ३३॥

कमपिठवउने वम सुभामिहरेष्टीमिउविम
 प्रवउहे सुभामिउममहरे

कुषमवनिपतेभूपराकि

[illegible]

वर्मावशुः॥ष्टाभाष्टाभनिभ

रभायउठैःमात्रैमपीऊज

कैमउउमवप्रयष्टुदरउ

सुउदेलरंमिउभासंमुप्र

लयउकल्लसुकल्लमःन

श्री
७५०

कुमिलिपडुकेयैसुप्रम

ॐ कर्मसमि स मुचु भु
 द्विः ॥ अउ ह्रीं मि
 भविसे धैवाः कल्लव
 लिउम पउउ पपुल गैव
 भुमि क र भाव मं भुः
 किं क मुठर विदिउ ठवउ
 कामा य सु भूम निउकरः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥

मैः श्रीगङ्गायाम्पुत्रि

भयैवः कथं भवति ॥ ३ ॥

इष्टीगङ्गायाम्पुत्रि

इति ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥

मन्त्राणि भवन्ति

मन्त्राणि भवन्ति

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 त्र्यम्बकं यजन्तुं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

† उठये न हूँ दिन हूँ
चद पदीय हूँ †

३१४
भृगादिमामनस्युत्पत्तिम्

भाषित। उयेउमालसूयउ

ममूडा ॥ ममूडा ममूडा ममूडा

ॐ नमः शिवाय ॥

जयत्रयविरुपयविरुमा॥

लगुं गग'कडा सुउडुइवि

यं लवकैश्च भुष्टभुग्निं विरत्रपि वक्रुहे

उक्तं गति इयं वृद्धि मे ... वृद्धि मे

[illegible]

॥ ५ ॥
मंडंभप्रलरुलरीलकुल

(Faint handwritten Devanagari script)

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ प्रचंडकुंजं पश्यन् ॥ ५३५ ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ १३ ॥ निवेदयन् कुरु विमेष ॥

[illegible]

५५३: ॥ कतुमेवप्रवृत्तमुमुक्षुः ॥ इति विद्याविमर्शविमर्शः ॥

ब्रह्मविवर्गः ॥ यथासुखं

[illegible]

(The following text is extremely faint and largely illegible due to fading and bleed-through from the reverse side of the page.)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

वृद्धेयं न पि यत्नं च प्रवृत्तिः ॥ अइमिः पदः पदः पदः पदः

लिउंउव॥ मउणमममुकु

^{५/३५२३४}
मकुवगउय। मउउउ॥ इ

मनुनिमदउउयययविनि

मममुकुपरमदउउय। कुग

गुलनिलिउवमवउउम

नदनेपि^उमपूमममिडि

कैवल्यमवः॥^{५३} ^{५३}मगप

^{मुनि}विदमपूतिपतिः

भक्तान्गलमतादमती

वसुधैवकुतुम्बम् ॥ सुदुर्भक्त

वामद्वन्द्वमिन्द्रियद्वन्द्वम्

श्री
३५३

यमकामवः॥ मोदरम

ਮੁਤਾਨਾ ਧੰਨ ਮੁਤਾਨਾ

वक्रकृतिभाभापे॥

[illegible]

ॐ : विरुधपदीतिमाला

सक्रः प्रपुम् मन्त्राणि

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

पुत्रे
पुत्रे मन्त्र मन्त्रः

ॐ वना हज ॐ उतिउप गीह करः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

पुत्रक ले डि उ बा मे कु भा श्री ह ह ल म म क म न प ल गे ल य व रु क
पुत्रा ल के अ तं अ म प र ॥ उ धै व उ ह म म सु उ म म सु उ म म सु उ म म सु उ म
म उ क र ल म डि म तं पं मे ध म म सु उ ह म म म क म म र व म म म सु उ क म सु उ म
म डिः म ध य क म ॥ भु ग म क म म सु क म डि म डि क म सु डि क म म र ॥ क र
॥ मा ॥ प धै व म वि ह डे डि म डि म ध य क म वि डि म य क म सु उ म सु उ म उ म क म म
उ म म सु म म म म म म डि म डि म
अं म मः उं म म म कः म म म प
ॐ डि क वि डि म ध य क म डि म
ध य क म उ म क म म उ म म सु म
डि ल य व म म उ क म

मैरिपु रुं ले क म मि सु मि

डि, र कु सु उ डि क उं म प क

उ ॥ म उ क र म उ म व प म

सु डि क म प ह, गी रं म प म

य म ॥ भ ग म क प म म क

मि ह म क म य ह य म म प धै

म म ग वि ह म म म म

उं म म म य म म व म प उ क म
म म म म मि डि म म म ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

महर्षि केवलमिह भिराऊ भैरविउमिरीभा उहकभावरविउमिहउपभा

— बुधमयठवः ३ अथर्व

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

[illegible]

६:। इकदलमरुतम्
निर्गमिदिपमोदिः

ਏਨ੍ਹਦਤਾਤਿਤਿਏਨਾਤਿਤਾਨੁ
ਮਿਏਨ੍ਹਮਰਮਿਨੀਕੋਦਯਮ

सिद्ध मन्त्रादिना मन्त्रिणा मन्त्रिणा

ਸ੍ਰੀ ੧੫੪੩ ਆਦਿ

॥ भाग्यवत्कृतं मया ॥

मिहकः ॥

174
173 6 10

[illegible]

ਮਾਠਰਤਿ

लेखमडिम्भडिगिक्कभलः उन्निरिगि

ਸਾਹਿਬਨਾਮ: ਧਰਮੀਵਰਤਿ ਨੁ ਤਿਮਿ

[The page contains dense handwritten Devanagari script, likely a manuscript or legal document.]

रमवभा॥॥^{७३}इंउिडीइउउरगुवडी

उरगुभाउउभिइउिकरेदरि॥

इविभभा॥भंलिलगुविपडिपू

वभेभ^{व+}इ^मसुगु॥नमिउमसुभं

गडि॥उउरगेभालकुपापुधाम

भूटा॥^{७३}समुकववयभुकिःरिय

येवसभापरा॥रिययेवसुपस

का० यैः मभुवेयम वगभुडेभाप

गविमज्जरा०^{१३} यैः॥ उत्रउं पमभवा

पुयेलपु० देलयेवमपउमिडिपूर

भा॥ मैलमोपगउं मभकु० सुउ

भनउपुउः पउउः॥ सुपउरिय

यापउमलपुवेमभुत्रउपम पुपु
मषपुमु कहु उ पुमभाभा॥ सुपुमु उहुदि॥ सुपु कगीक
व लवं म पूरु भाभमपुमुपुमं मेव। उ ल पुमु उहु व लवं मव
पुयकु म पुमु कुपमुकर० सुममभुः सुपुउ॥ उहु
मुउपम कु उर पुमु कुपमुकर० सुममभुः सुपुउ॥ उहु
उ कदमिदु कुं भुदिपुमु उहु पुमु उ सुयठभा सुपुमु
उरमभु पुमु उ पुडीति उ ठवहति पुम सुज। मभुनेपम कुवडीति पुमुउ
पुडीतिः। कदक० व मभाहविसेष ठव मभुपु ल क दिविपं मभु
उतिवउ०॥ उति मभुनेपम कुवडीति उहु पुपुउ मिडि दिविपं मभु
रुम । उ सुव मभु पडु विपुमिडि क ददिमिडु मभाउ उ ति ॥ ॥

ॐ नमो भगवते ॥ ३ ॥ अथ मन्त्रः ॥ अथ मन्त्रः ॥ ३ ॥ अथ मन्त्रः ॥ ३ ॥ अथ मन्त्रः ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते ॥ ३ ॥ अथ मन्त्रः ॥ अथ मन्त्रः ॥ ३ ॥ अथ मन्त्रः ॥ ३ ॥ अथ मन्त्रः ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते ॥ ३ ॥ अथ मन्त्रः ॥ अथ मन्त्रः ॥ ३ ॥ अथ मन्त्रः ॥ ३ ॥ अथ मन्त्रः ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते ॥ ३ ॥ अथ मन्त्रः ॥ अथ मन्त्रः ॥ ३ ॥ अथ मन्त्रः ॥ ३ ॥ अथ मन्त्रः ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते ॥ ३ ॥ अथ मन्त्रः ॥ अथ मन्त्रः ॥ ३ ॥ अथ मन्त्रः ॥ ३ ॥ अथ मन्त्रः ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते ॥ ३ ॥ अथ मन्त्रः ॥ अथ मन्त्रः ॥ ३ ॥ अथ मन्त्रः ॥ ३ ॥ अथ मन्त्रः ॥ ३ ॥

गेल्यतिरिक्त उत्र सुसुलभ

कपीमभुता भूमे नैव विर

ठमठिर्वैरु नुपाने रुक्ता

अत्र नुपानगता विराता

पुत्रीयता ठवनीमभुतिनी

श्री
११०

उक्तिरिक्ता ॥ अथ सुवकुलम

मंगुलीकुडउतिवतजः भू कभवृत्कृतं प्रयइडि

[illegible][illegible]

रभरविपराभः, कुरुकरं मद्रभा
मष्टाविप वि रैव मेवरे।

धामेवरेरदेतुः कलमपलतुके।

भरः पूरुतमेवरेविभिनुभा॥ विगी

रापुवभारं तु पूरुतधपरं सते

पूभुतधयतुं यरुतुं गकल

रभाकरकरं यस्वेवपावापटविपट

यः विरुतिमि यकिः भा॥ ३

पटविपटयेरुहयः उडिप तु पूरुगति मयकि ह्येय ॥

विगीटडि विगार लैरु सु पते
लेपभावेर पूरु सुप मेय सु
यमपुवभा रं हरे सु हरे उ
हरे ॥ ३ वा पूरु सु पूरु उ
ध विरुभा र सुय र तु मरु
रुम भुव र सु हरे हरे ॥
उ वा य रि उ डि म व भु र सु
रु भु र सु म ह म भं ह वि र सु
ध य ह न रं म भु र सु म
ध र ॥
मम भु रं म भु र
उ डि तु प भा ॥ ३ वा
कटकरं य यः पिय

पमारेउविगीलसेपमेययद

पुवमं, भैकं॥ यष॥ कभलभर

उपमारेउविगीलपमेययद मुहरे विमेषकिटखा॥
मरेय मेयकुप भाषा ही मभुप मरकुपेक मल के विगीलकु
भुभिकभलेमकुवलयडा निसक मुहरे
रउकुः॥

नकलडिकवाभा, भासभकुभा

भरुगेउप उपरभरकेयभा॥ मर

भाषारिकभलारिकुपउयपुव

कउ
प्रर
उप

मिउभा॥ यमउरेकाउरुनपुवभी

महर्षि नरहर्ष

३७

यउभापग॥यष॥मृ॥नरुदु

मृष्टापि म क पि कृपे वरुः सुय

मं मृ॥उरिप्रक॥विउ॥

मृभा मभाउ पूरपउः जयैव

या मभाभाभा म॥पमु॥

मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय

नमि॥॥यउउ॥ययि

मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय
मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय
मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय
मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय
मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय
मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय
मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय
मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय
मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय
मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय

मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय

मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय

मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय

मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय

मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय

मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय

मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय
मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय
मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय
मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय
मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय
मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय
मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय
मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय
मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय
मृष्टपि म क पि कृपे वरुः सुय

उद्यं मम च त्रेमम च न ह ॥ यः अतिमये किं भू मृते हृष्टे पमेडिका विडा ॥ यम
मृदुलमृदं मृत्त पमेड सुमिदुपमा इउ विमेष ॥ यमडा ॥ मभृदुभ यमुकं यक्रिय
उमेपमेडि । मुदियषा । उमरुन री पुां दुमे मुयवमेडा ॥ इमिड उरुपभीय
उउरुमउतेः उभाभुगव ॥ मभा । ममभुदेयषा । पुधं पुव निपदिउं यमिभृदुका
कनं वभृदु विदुमभुभा उउउरुदुमि मरुमुउभा मुभेधु पटमुदमभुउधु ॥
मृदमभुदेमभुवयामभुउउः । य हृकं विमभिमुउडा य धाददेभुः ५
भुडिभृदः ५ मयववव **रमवपुवडा ॥ क१ ॥ सुसुमीपु**
धुः ५ ॥ नीपिउः सुमः कटक ॥ येः पौवपटविमुं मः विपटय दुनुक नकु
पुदुिउ रीपुदीपनडिकः क ड ॥ उउरु कटक ॥ येः पौवपट ॥ विमुं मे विटया वि
यमिभृमि मगं वपुः ॥ किं क **कगिउं वकु कटमु प्रवभुकु मउडा**
उकु यमभिगविमपि नं मेयेकिट ॥ य ॥ क यमिडा ॥ मृदपिपुन नह ॥
मुकु रवडा यम ॥ ममुइ **यषा ॥ कयमभिपुउभा मभन**
विदुदु मभुमभुमुभाः कि र ॥ धुपमु इवदिडिकटक ॥ येः पौवपटविपटयः
डि वउडा ॥ मृदुदु मदीरुम कटक ॥ येः ५ नकुन . डयषा मृविगन ॥
भुः ५ मउ उउमभुदेपिम **हः उउमभापका ॥ रमभं रमभा** ममपकुग
मुदुः मिकुउउः कटक ॥ विनेन ननः कटक ॥ रीपभुग विदुदुडा ॥ मय
येः पौवपटविमुं मेविपट दे मय ॥ ५ः क नी ॥ उउडाः पधिक गेदिहः ॥
यउनुक नकु ठरडि ॥ मयक नः पुवदु मयः मभवपुमिउम डिपधिक गेदि
उउरु कटक ॥ येः पौवपटवि री ॥ कनेयमः मृदका ॥ कुपमुयदे वगभउउदेव
मटयेयषा ॥ कयमभिडिम **पुडिवभुपभाउभा मभा उधुमुर**
ममपमुदुय पिमुिउ विमगे ॥ डिरी मभा ॥ नह ॥ कटकमिडिकटक ॥
मृदुमभिपुन नह ॥ ममुनुकने ॥ य वि उरुः ॥
मुकटमुप्रव **कटुमेव कययइवउ सुयमिडिः ॥ मभा**
ममृवकुल्ल ५ म पिपु
नह ॥ मुक ॥ धुप **उपमेयवउ उपमव**
ममिडिकट **उप०** क ॥ येः पौवपटविपटयः कटक ॥ येः मुनुक नकु
यषा । मृविगन विनेन ननः कटक ॥ रीपभुग विदुदुडा ॥ मयभाउः
कनी ॥ उउडाः पधिक गेदिहः मृदका ॥ कुपमुक नमुयदे वगभउउदेव
पधिक गेदि रीम ॥ नह ॥ कटक उमिडिकटक ॥ येः मुनुकने पिडि
॥ ॥

ਸੁਦਯੋਗ ਮੀ

ममभुक्तु यमभुक्तु ॥

[illegible]

गुकरुमपरपुपरपु

रत्नममकुलितभुवनादे

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

विमेषप्रभुतेप्रभुतिभाभाहेकिटव। महुदिडि॥ विष्णुहृगकभरुके
उउमहीरुसभंमिडंप्रहृम महुप्रवधेडि।

वडीडिभाभाहप्रभुतेविमेषः क

विडः^{१७}॥ महुप्रवधेप्रलपूभा

तारंकगेडिकेप्रुडियाउवरयःभा
वेमिपरे

वप्रहृःमप्रभाहरीडिभाहृणी
मरुहृप्रुडिहृगकभरुप्रमिहृदिविमेषप्रभुतेमहुप्रवधेहृदिभा
महुप्रुभा॥ उडिहृम
विउंउमहृल्लंमियाः॥ मरुहृ
महुप्रुयभा॥

प्रुडिहृउमहृल्लंमियाः॥ मरुहृ
महुप्रुयभा॥

क ग ल्प मुडे म प्र मुउ कटे कु द प्प मु प्र संभा य धा ॥ ग ल्प मु ल्प मुडे
ह मि ॥

वउमु धा म ग ल्प मु मिउः मउः विहउमि

दिउभा ॥ ग ल्प मु ल्प मुडा न पा ० य

डिभं मु वृ पि कु ली मि उः कु ल्ले ठे ल्प
कुभा ग म मि वैः कुभा ग्प ल्प वैः मृ पि किं कु ल्प डो

भा कुभा ग म मि वैः मृ पि किं कु ल्प डो

उउं ग ल्प मु क मु व गि ठ र र म उ प्र ग

प ल्प ग मि उ उ र व ल उ मु र व ल क

र क क म क ष डे ॥ म उ प्र मु र मु डं

ठ व उं ल्प क र ग यः प ल्प मु ग डः

क ट म हि डि ड मि डि ॥

म उ प्र मु क य इ मु डं क

व कु क म यः प ल्प मु

य इ ड उ ड मि क

कु प प्र मु डं क म प्र मु

उ कु प मु मु क व ड उ डे डिः

ग ल्प मु ड उ मु प्र मु ड ड ड

मु ड कं मु ड ड म ड य ड ड

प्र मु ड प्र सं म वै य मि कः

प्यः प्ररिगिपययडक, उल्लप

यहः पमं मेमुयरेतुविगु

युक्ति
मपुकाकलीनह...
मुपमवलहूगु...
यैपुमुभिभिभापवः श्रीरभदे
वः हुं पायजयय भापवेर घुः
मकुरं मुमुं गलही कय मकुरं
ममदेहैयैरदउ उहकः ॥ कीरु
मेरठवैरभ्रदतिमु उ॥ पुन
प्रचो। वनिंलिउ श्री रगैर
निंलिउ ॥ (कयः श्रीरुडः
मम, उदर ॥ ३०२ श्रीरुडः

पयपु निपु निविपु वउ, ३

उयः भिहमहै विरउतुपु

यः श्रीपुमं देवि पाउमं ॥ अ

पयउ निरिउ उवपिसेपके

नमुपु ॥ यष येरपुमुभरेठ

उहउमपल्लह... मदेकालिय...
यः रवेपरव... लयेयमु ॥ यमुगैरव...
उययमुममममुः किमिहद ॥ ममिं भषुडीउमिमु...
रिउउरगममिभुिरेरउडि ॥ मरुकरंयुप्रीं हयैविमक...
करः ॥ मचरः मुडिनाधिउउउ ॥ ॥ हिडीयपहू उभापवः श्रीमददेवः हुंमचद
पायज ॥ पुमुभरेठवैरठपीकउकमेर ॥ यैर श्रीमददेव ॥ मयुभिहू ॥ वनिंलिहू
यः विहूरेकः महीरुडः ममुंरीउः प्रचं श्रीमददेवैरठपुदेकः रिभाददेमगउरी
उउउकः उयउ हूउउ... रददविलयंमयमुमः उहउउ... दगवलयः ॥
ममिं पडु ममुः ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 सुवन्द्यं भगवत्पुत्रं भगवत्पुत्रं भगवत्पुत्रं
 कुरुते ॥ कुरुते ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 सुवन्द्यं भगवत्पुत्रं भगवत्पुत्रं भगवत्पुत्रं
 कुरुते ॥ कुरुते ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 सुवन्द्यं भगवत्पुत्रं भगवत्पुत्रं भगवत्पुत्रं
 कुरुते ॥ कुरुते ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 सुवन्द्यं भगवत्पुत्रं भगवत्पुत्रं भगवत्पुत्रं
 कुरुते ॥ कुरुते ॥

ॐ ॥ श्री लंका विष्णुः ॥

यमद्वयः पुनः भगवत्पु

विंरुते॥ममकषाम॥उडुवे

मुनमकुप, पाटिउममविठ

किमिदसयिह, रयकषापिरयउ

कैरिगिमीरुमकिरत्रिमेक

ममकषामुनीनं गुलः मम
पेधक इडा ॥

रयउ॥ रिवा... वैरिगकनः

धक नूनमभापिउमलिडकुः

ममामरी... वरुतु पापुउय

कयिउमकुनकुपयुनमु
मुकुरेडुपेधकइकुइय
साविचल डिचिलमपम

अक भाणवेर, रकुप्रभापिउउव

मुवेमरुदरिउपेधकइकुइय
पिडा मरुगमुयडुइकुइय

कउविगुल सुधकुठवतुऊ

रेमु ॥ अथमरुगमुयडुइकुइय
भापिउमकुनकुपयुनमु

कउविगुल... ममकषामुनीनं गुलः मम
मुनमकुप, पाटिउममविठ
कैरिगिमीरुमकिरत्रिमेक
रयउ॥ रिवा... वैरिगकनः
ममामरी... वरुतु पापुउय
अक भाणवेर, रकुप्रभापिउउव
कउविगुल सुधकुठवतुऊ
कउविगुल... ममकषामुनीनं गुलः मम
मुनमकुप, पाटिउममविठ
कैरिगिमीरुमकिरत्रिमेक
रयउ॥ रिवा... वैरिगकनः
ममामरी... वरुतु पापुउय
अक भाणवेर, रकुप्रभापिउउव
कउविगुल सुधकुठवतुऊ

कुतुम्भ

मदिगुहापिगुहं यथा ॥ गल्लुः मरुहः ॥ सुउरुमङ्ग
पुष्पकुडि पुष्पकं रं न लभ्यते भुङ्क्ते उच्यते ॥

मदिगुहापिगुहा लभ्यते भुङ्क्ते उच्यते ॥ मदिगुहापिगुहा
लभ्यते भुङ्क्ते उच्यते ॥ मदिगुहापिगुहा लभ्यते भुङ्क्ते उच्यते ॥

मदिगुहापिगुहा लभ्यते भुङ्क्ते उच्यते ॥ मदिगुहापिगुहा
लभ्यते भुङ्क्ते उच्यते ॥ मदिगुहापिगुहा लभ्यते भुङ्क्ते उच्यते ॥

मदिगुहापिगुहा लभ्यते भुङ्क्ते उच्यते ॥ मदिगुहापिगुहा
लभ्यते भुङ्क्ते उच्यते ॥ मदिगुहापिगुहा लभ्यते भुङ्क्ते उच्यते ॥

मदिगुहापिगुहा लभ्यते भुङ्क्ते उच्यते ॥ मदिगुहापिगुहा
लभ्यते भुङ्क्ते उच्यते ॥ मदिगुहापिगुहा लभ्यते भुङ्क्ते उच्यते ॥

मदिगुहापिगुहा लभ्यते भुङ्क्ते उच्यते ॥ मदिगुहापिगुहा
लभ्यते भुङ्क्ते उच्यते ॥ मदिगुहापिगुहा लभ्यते भुङ्क्ते उच्यते ॥

किं कुतः अभिप्रायः ॥ १ ॥
सुदृग्भावेन हि प्रमुखा पमिउ प्रभादुता रिमह्वरे परिमिउते पुपे सु
दुरिये मते सुदृग्भाः हेमं मज्जं हं दिक्कन्ः उभे विह्वः प्रियमककुभा
येन मेकं अभिमुदि। वमुदिहे वमुता उदुपयदिउमना ये ये मभापुः मभा
यिः ॥ १३ ॥ ममुदिह्वः ॥ हे डिमुदिह्वः ॥ प्रमल्लिह्विभिह्वः प्रचंभिह्वः ॥ मुरिहं
प्रमभउया प्रक मभाह्वः ॥ उ डिमह्वः ॥ प्रडिपाह्व डिप्रडिपाह्विह्वः ॥ प्रडि
पाह्विह्वः ॥ हेमं मज्जं हं यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥ हेमं मज्जं हं यमुदिह्वः ॥
मं मज्जं हं यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥
क न्ने पुये मभाह्वः कं मभाह्वः ॥ ३३ ॥ उ डिमह्वः ॥ ३३ ॥
यतुः ॥

मुडिभममवयममभा ॥ ५ ॥

मपुडी उडिपिह्विह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥
उडिपिह्विह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥
उडिपिह्विह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥
उडिपिह्विह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥

गमविदिउउयविचिकन्

यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥
यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥
यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥
यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥

कमपिउमभाह्विडिपाकप

यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥
यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥
यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥
यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥ यमुदिह्वः ॥ ३३ ॥

वृत्तकन्दे । लैगालिदकभदि
मीरुदिने मरिच्छा उकिप्र कभांम

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

एषां पदार्थानां गुणोपपत्तिरिति चेन्न तदुक्तं नैवेद्येति चेन्न तदुक्तं नैवेद्येति
नैवेद्येति चेन्न तदुक्तं नैवेद्येति ॥

इति वा मनीषा उक्तं प्रमुखा

मैत्रेयम् । भावः स्वयम्भवादि

रैक्यं गलच्छ्रीमन्नि उक्तं

ग, भावः भावः स्वयम्भवादि

लभिः उक्तं भावः स्वयम्भवादि

अपुं किं उक्तं उक्तं भावः

भेलीगविलीगवकिभा ॥ कृष्ण

त्रयुल्लिखितः ॥ यथा ॥ डिपु

कुपवम'दूठ'वपिदिडा'मी'कुं

रम'कु'प्र'डि, भन'य'दु'डि'डा

श्री
१०७
ख'त्र'यि'प्र'र'क'व'दू'म'हा'म
वः, डा'क'तु'वि'व'ण'सि'धो'पि'र'म

В

भमज्जः पूर्वविनीभा मण्ड

उभगगं नय नयैराउडिके

चंविधिः॥ मङ्गलिकिङ्कुट

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ਤੁਹੰ ਰਹਿ ਮੁਤੁ ਨ ਏਤੁ ਤੁਹੰ ਰਹਿ ਮੁਤੁ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सुविप्रतिपत्तिः तिष्ठति प्रत्यक्षं विदितं

चिमखरुङ्क २७ त्रगु ७

५४ वक्र ख रूंद कृपिड भडी डि

ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥

ॐ ह्रीं क्लीं ॐ ह्रीं क्लीं ॐ ह्रीं क्लीं

उत्तरापूर्ति पतिः प्रवर्णापूर्ति

३५४ पृष्ठपत्रिः श्रीसुखभाकु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

कैप कृत पिता १५५५ (११३३५)

ਤਿੰਗਾਤਲਤਿਕਯੋਖ:॥੧॥

निष्कर्षः

[illegible]

गुलः गुलः
उवागुविदिउधुउहुहुय ॥॥

मिउकरकररमिरदिठ,दिठ

करकरपरमिपवकीडिः
गुलहुमइहेरुपुहयगगुदिडिउहुपरीकूअभा
भरुधकभलाकभलाभापि

उवेवासिनगुध ॥ उल,र
एयवे

स्री
३१०
मडिगुलरलमभदिम
गुहुवे गविकिरलैः
दिंयेपडि,रउकिरल अ

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ किं ह्यस्य सत्त्वस्य ॥ इति श्रुत्वा वै यत्तु भगवन्निधिः ॥ वरं ह्य
 नैव यमः स ॥ किं ह्यस्य सत्त्वस्य ॥ इति श्रुत्वा वै यत्तु भगवन्निधिः ॥ वरं ह्य
 दीप्तं भगवत्पुत्रं वै वरं ह्यदीप्तं सत्त्वस्य ॥ इति श्रुत्वा वै यत्तु भगवन्निधिः ॥ वरं ह्य
 यत्तु भगवत्पुत्रं वै वरं ह्यदीप्तं सत्त्वस्य ॥ इति श्रुत्वा वै यत्तु भगवन्निधिः ॥ वरं ह्य
 भाग्यं सत्त्वस्य ॥ इति श्रुत्वा वै यत्तु भगवन्निधिः ॥ वरं ह्य
 इत्यस्य सत्त्वस्य ॥ इति श्रुत्वा वै यत्तु भगवन्निधिः ॥ वरं ह्य
 इत्यस्य सत्त्वस्य ॥ इति श्रुत्वा वै यत्तु भगवन्निधिः ॥ वरं ह्य
 इत्यस्य सत्त्वस्य ॥ इति श्रुत्वा वै यत्तु भगवन्निधिः ॥ वरं ह्य
 इत्यस्य सत्त्वस्य ॥ इति श्रुत्वा वै यत्तु भगवन्निधिः ॥ वरं ह्य

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ भवती

दुःखयित्तनमक ५७ भा३

५५५ भूमे भद्रा भद्रा भद्रा

अविष्मयगभासम्भुतसं

त्रिनि, मधु एङ्कुचडावलिक

श्री

37

नविर्णः श्रीनकपालेश्वरपद

॥ अथ श्रीगणेशोत्सवः ॥
 गणेशाय नमः ॥

[illegible]

दितामन्मृतमृत्तिनिमी-

ਪਸ਼ੁਪਤਮਤਿਕਤਵਿਰਤਮਾ

नः सुदुर्भीभक्तिउमिदुउमाउ

[The page contains dense handwritten Devanagari script, likely a religious or philosophical treatise.]

[illegible]

वरिभा ॥ अउरी पनालभु
 रवभागुदकुडविद्यदलीह विरुजकैवल विरुवेजे मउरवधडी डिहुरिहडी
 डि कपुकन्य ॥ महुं ॥ ३६ विरुवरा मभागा ॥ ५५ बा ॥ ५५ बा ॥ ५५ बा ॥
 उपास ॥ यगुविदवा मउ उऊर वरुदिहपि लयतुः

ठव पटवभायिरः भिउतः

डि कपुकन्य ॥ पगिउग डि
 मउकपुकन्य विरुहकि मउरव पटवभायि कुज ॥ मीपन नमुइयेमुइ
 पटवभायि ॥ ५५ बा ॥ ५५ बा ॥ ५५ बा ॥ ५५ बा ॥ ५५ बा ॥ ५५ बा ॥
 गडि मउिल नी उमल उउग

गिवउउ मकुयः ॥ डिउउविध

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पूडि कुलेडि थपू मममः दिठर मीमं मुडि मम दिमि गज ॥ उरुं मुडि कु
 ड। दिमि गज मम मुडि। दिठर मुडि मुडि गजः डि मुडि थप मम मुडि मुडि
 दि मुडि मुडि गज मम ॥ केरलं मुडि मुडि गज मुडि मुडि गज मम मुडि मुडि
 मुडि मुडि गज मम मुडि मुडि गज मुडि मुडि गज मम मुडि मुडि गज मम
 मुडि मुडि गज मम मुडि मुडि गज मुडि मुडि गज मम मुडि मुडि गज मम
 मुडि मुडि गज मम मुडि मुडि गज मुडि मुडि गज मम मुडि मुडि गज मम
 मुडि मुडि गज मम मुडि मुडि गज मुडि मुडि गज मम मुडि मुडि गज मम
 मुडि मुडि गज मम मुडि मुडि गज मुडि मुडि गज मम मुडि मुडि गज मम

प्रिये सुप्रवृत्त उभय उभिव उभिव
 भि उति ॥ वि हउ गमल जी
 मय प मय उति उति मय मय

सुउवमः विठवं भगवान् कृष्णम् कलपति कुरुद्वयं वैगम
नभेदकं सुति वप्रः पुनः क

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

उं पूरुवडिगडः कलदरिः ॥ पूडिकुल्लुंगमः लोमव

मदनपुरी उक्तलसामुमु

अरिहताय नमः ॥ अरिहताय नमः ॥ अरिहताय नमः ॥

उद्भूतमिदं निवेद्य सुप्रतिभाषा ॥ ३ ॥
विदुषां सुकलापयत्तु

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ इति उक्तं श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अष्टादशोऽध्याये ॥

ਸ੍ਰੀਤਿ:॥ ਤਤਿਕਹੁਪੁਦੀਪੋ ਬਛੁਕੇ ॥ ਭਾਉਪੁਕੁ ॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदमुनिर्ब्रह्मविद्यायां युधिष्ठिर उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पांडवश्चैतानि शूरवीरानिमिश्रा ॥

[illegible]

कर्म मनीक मयूय वृद्ध कर्म विवेद ॥ प्रथम कर्माणि ॥
विष्णु पदवर्मा मुनि

हामदभरुणसमुद्रगुल ॥ ५ डिक्क
पूरीये ॥ ५ पेक्किडिभिडि

ॐ ॥ प्रक-उच्छ्रुः ॥ अथ ॥ श्री भिर्यपुडि मुकुपडिमद्वरि
३५५॥ उदिपरमभुते

५ वृद्धिः ५ सुदुर्गति
५ भूमादि विषय

[illegible]

三

ਪੁਨ੍ਹਤਿ ਵਿਖਟੁ ਆਨ

ਸੁਨਿਸਕੋਰੀਏਸੁਨਿ

भूतभावि

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

विमृतिः ॥ पूरुतयेमिहः सु

विचारकः भिन्नः जीवोऽयः ॥

[illegible][illegible][illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

[illegible]

ਮੁਕਤਿ ਕੇ ਰੋਗ ਅਧੀਐ ॥ ਤਿਥਿ ਕੇ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥ ਸਿਫੁ ਗੁਰੂ ਬਾਨੀਐ ॥ ਸੁਖਿ ਭਾਗੁ ਮਨੁ ਮਾਏ ॥
 ਸਿਫੁ ਸਿਫੁ ਸਿਫੁ ਪਿਪਾਸਿ ਮਰੀਐ ॥ ਤੇਸਰਾ ਮਰਿਵੇ ਸਾਧਿ ਸਿਵੇ ਸਾਧਿ ॥ ਸੁਖਿ ਭਾਗੁ ਮਨੁ ਮਾਏ ॥
 ਭੀਰਤਿ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਮਨੁ ਮਾਏ ॥ ਭੀਰਤਿ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਮਨੁ ਮਾਏ ॥ ਭੀਰਤਿ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਮਨੁ ਮਾਏ ॥
 ਵਿਕਾਰੁ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਮਨੁ ਮਾਏ ॥ ਭੀਰਤਿ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਮਨੁ ਮਾਏ ॥ ਭੀਰਤਿ ॥ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਮਨੁ ਮਾਏ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

वाडावमेवैपरिवरुहमा॥प्रति

कंडुनिवसुभावंममद्वुतिठामे

ननायकवसुतिउहंनपूतिनाय

कवमिद्वपमेवपटवसेडा॥

मिहमिहपुत्रुचयषापि॥१॥

वभकुमिमिहमिहमीरामि

व,पीरमेडामीरामपुहषव

सी

१५०

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

देमदुरदगगिभममिउमेवेप

उरठवदुगवविउिउडमेरवामुडागममड डडि मुवेयः उडमेरवापिम विप्रहउेप्रयेहंम
 ललविहं लभरीडि रुडुगके विगमुहं ॥ मरडुधरभाउपक
 डिगललवउमेरवामु किंड विगमुहं ॥ मरडुधरभाउपक
 वेहं लरुडुगके डिप्रहः उडि मीवडुवेम मगडिपि कः

विहंमरंभाउभीवेसादि रकधवलरंयव ॥ कदुगमल
 देमाउमिउं ॥ वभउेमे मरि

कलावमिउं ॥ वरकंमल्लगदि, रयिकव मुडुगगवभउ
 वयेवमिउं ॥ लयिकवामुकि
 प्रयमुमं प्रकहंरुडुमिउमा

मुदिगदिगदि लंवे श्रीपड सुवलमभममुडुवदि वलि
 वउेवमुमिउमि श्रीहमिगुलमा

उडुपरीलमा ॥ उरठवदुगवविउि
 मुडेवंममुडुः ॥ ३५९ मरिप्र उधउधर लुप्रमंभरमा ॥ ३

हउेविधये उरठवदुगवविउिउडमेर
 मिरुडिगवमुमा उडुमेरवापिभविप्र
 हउेवेवमुमं गलसे ॥ हल्लुगके डिगललवि
 धयेवमुमेव ॥ मरिप्रहउेपमेमुडुडिके
 पिरवमुमिउि हल्लुगः

॥ मेरीया भुगी नुमा उहरे मसू कुं मजयति । गयिख पा म पूरु म रेडि ॥ उ डि कं कुं ॥

मरु कुं य क उ उ म क र कुं ॥ म क उ उ म क र कुं ॥
व कुं उ डि उ म क र कुं उ य क र कुं सि म र कुं ॥ म क र कुं य क र कुं ॥ य क र कुं वि म र कुं ॥
वि उ म पि । व कुं उ डि उ म क र कुं ॥ उ डि म वि उ म पि म क र कुं वि म र कुं ॥ य क र कुं म क र कुं ॥
य क र कुं ॥ म क र कुं वि म र कुं ॥ म क र कुं य क र कुं ॥ म क र कुं य क र कुं ॥ म क र कुं य क र कुं ॥
॥ म क र कुं य क र कुं ॥ म क र कुं य क र कुं ॥ म क र कुं य क र कुं ॥ म क र कुं य क र कुं ॥

नुमा उ डि गयिक, पा म पूरु

गयि म गयिक के पा मिवल

नमा ॥ उ कुं वि प्रवि ल उ म र

मिह म उ र म म क र कुं ॥
म र मिह म म क र कुं ॥ म र मिह म म क र कुं ॥

ग म म । प्र मिह मिह म र कुं

म म प वि प उ गे डि ॥ उ म र कुं

उ म र कुं म म प वि प उ गे डि ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥
म म प वि प उ गे डि ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥
म म प वि प उ गे डि ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥
म म प वि प उ गे डि ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥
म म प वि प उ गे डि ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥
म म प वि प उ गे डि ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥
म म प वि प उ गे डि ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥
म म प वि प उ गे डि ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥
म म प वि प उ गे डि ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥
म म प वि प उ गे डि ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥ उ म र कुं ॥

भारतमात्र

कंदरुपमडासिधुमि

ਵੇਤਨੁ ਰਨਾਵੇਤ ਬਾਪੁਤੀਤਨ

ॐ ॥ अउरुकरा अङ्कभि

किमु वदामि गृहं नैकिव

परं मेधः यवदुत्तमप

विपेक्षता ^{यव} ॥ का कटंसमल

काः कसकुलभिदामे

यश्चिउकुमिप्रसुतेषुपिभि

नुयामवदिमिउरिउिपूर

मंगेभाभाः महुंरुविहउ
 यः किनुमडागुपागुठग
 निलंकिणीविउभा॥उउरु
 सुमरंरापुहरेउं, एणीविउ
 नपुठिकमपागुठगुआउ
 रकुमिडि।पूमिहं उमुगुप
 भाउयेपाउंसाउमेवपुपु

तिरुपुनः मङ्गलार्थाङ्गुलीतिः ॥

मङ्गलार्थाङ्गुलीतिः नडविनेयैक्यपी

करं मङ्गलार्थाङ्गुलीतिः मातुम्

मङ्गलार्थाङ्गुलीतिः नडविनेयैक्यपी

हृन्मैठकरं मङ्गलार्थाङ्गुलीतिः

मङ्गलार्थाङ्गुलीतिः उषाकरं ॥ १॥

मङ्गलार्थाङ्गुलीतिः मङ्गलार्थाङ्गुलीतिः

कपू
मे
१५०

ब्रह्मसूयः॥ गभात्रुलेत्रुतिउरे

गुटेउयेरमः॥ वीरठयनक

येरकेसूयत्रुविरेठउडि

मुमुयेकेउडि विवमंभूय
दुखगाठः गभात्रुले

डिपकगउत्रुठयनकेविरे

विमदुगमेवपुडिपक
यिदिदीरेले-----

मयिउहः॥ मात्रुमुद्रयेमु

----- नकुवकेपि
गभात्रुलेदणदेविगेठदे

नेरत्रुलेविरेठउडिरभा

यत्रकुलेदिगुदिडि

त्रुगभत्रुकेदभा॥ यषः गग

वीरमउडि वीरभुदेन विहृदि ३ उयै न हृदगह कडुकुमि भूक
 लका कुनययिउय भउगं वीरमभृदृदगय कडु पुडीयडे उडि हवः ॥
 ८८ उः ॥

रक्तरेणी भउवाकासा प्रदिनी
 उभदिका मि^इमिउसु उभउवि
 सुभनयवती पुडिम सुगोविन्दः
 रपां पुवनेय वयेक मित्रपि
 कुगभा उगवृण रसिगोवि
 वउडे ॥ यष ॥ कुगभानिगुत्र
 वपागिउड भालगरेक मिउ

कपू
 म
 १५१

कुंज निगुतिठि कुंज निगुतिठि विमेष लैग डी वक्रग ड नम भुव ड मकु
 मुने डडिह डैक डडिह ड नम भुव ड मकु विमेष लैग डी वक्रग ड नम भुव ड मकु
 वीग नम ड मकु विमेष लैग डी वक्रग ड नम भुव ड मकु विमेष लैग डी वक्रग ड नम भुव ड मकु
 ड मकु विमेष लैग डी वक्रग ड नम भुव ड मकु विमेष लैग डी वक्रग ड नम भुव ड मकु

गङ्गमपुः गङ्गमिवातिः प

गिरहभारमुगङ्गमिपुत्रसु

गलाः ममेति डैः ऊरुत संभु

गमिः पकैः पगारं भपवीष्ट

भारगो मंवीरिउत्तुनवा

विमेषकैः भगविनिः कन्दल

मुकुलैः विभारपटङ्गुडलेविष

गभा॥यष॥प्रयंमगसरेडुडी॥

पीरसुतविभक्तः, नहुनरूप

रभ्यजीतीवीदिभंभरकः॥१॥

उद्गुग्निमूत्रमः ममगुग्निपात्रितं

दमुभरलेउउधुप्ररिउठे।

मउप्रवावकुभ्रमं मृदुग

सुभाषिकनं पयडि॥ यत्र

कउतिकरलै सुविपाणि उविपु
 छित्रभा मूलकठरुतः समीर
 मउविगउ मरम भगमएव
 पाः उउम्यु कै मुनि ठिगुवलि कि
 उवि ॥ अउक भक मु रु उगण
 कउसीनि यषः मभङ्गरका
 उवि उषः रिगु मु यषः मभः

क
 प्रम
 ३५७

मङ्गल उरुवलेकरा मङ्गल

मङ्गल मङ्गल

मङ्गल मङ्गल मङ्गल

मङ्गल मङ्गल मङ्गल

मङ्गल मङ्गल मङ्गल

मङ्गल मङ्गल मङ्गल

मङ्गल मङ्गल मङ्गल

मङ्गल मङ्गल मङ्गल

मङ्गल मङ्गल मङ्गल

मङ्गल मङ्गल मङ्गल

मङ्गल मङ्गल मङ्गल

मङ्गल मङ्गल मङ्गल

मङ्गल मङ्गल मङ्गल

मङ्गल मङ्गल मङ्गल

मङ्गल मङ्गल मङ्गल

ਮਾਘ ਜਥੇ ਪਤਿ ਤ ਵਿਗੇਧ :

कुमारविषय मंडित प्रतीक

मिडिउवेव्विणिः। यथा॥॥॥

गसुपतडिपुवममोरंभभाग

ग। पृथग्भाषा गूढ गूढः श्री ३३

३५

सुखादृष्टं कुतश्चकम् ॥ सुखं गते विप्रलम्भे ॥ विविधे यथा किमुक्तं
मुक्तमुक्ति

निनिजिनिः ॥ अश्लीति श्री गति

गच्छति मश्री गति ॥ उति श्री गति

पकयेन भगवत् भगवत् विविधः

किमुक्तमुक्तलम्भः प्रमत्तमति

कते पुनरपि सुकतुंगदुक्तमे

सुखमुक्ति विविधे यथा किमुक्तं सुखं गते विप्रलम्भे ॥ विविधे यथा किमुक्तं
पुनरपि सुकतुंगदुक्तमे सुखमुक्ति विविधे यथा किमुक्तं सुखं गते विप्रलम्भे ॥
उत्तममुक्तं सुलिङ्गं विविधे यथा किमुक्तं सुखं गते विप्रलम्भे ॥ विविधे यथा किमुक्तं
भावेति ॥ सुकतुंगदुक्तमे सुखमुक्ति विविधे यथा किमुक्तं सुखं गते विप्रलम्भे ॥
यथा मश्री गति मश्री गति मश्री गति मश्री गति मश्री गति मश्री गति मश्री गति मश्री गति

उष्टुमङ्कुरः उषाधिरकुरम्

गुल्लि डि गुल्लि पुण्ड्रकमः कठे डि कठः भातुरे मङ्गल दिग्मुद्रा मंके मङ्गल
 जेय पुण्ड्रकमं श्री कृष्णः विमूर्ति रिडि उष्टा मङ्गल पुण्ड्रि
 डिम डिग्गं मंके वृष्टिपुत्र उष्टा मङ्गल पुण्ड्रि
 मातुः ११० पुण्ड्रकमं कृष्णमङ्गल डिम

ॐ
 वाहमरागिगिडिमरूपेपिउर
 कनल्लरभापुसकाउपेसुलुउ
 उकुंदि।गुल्लःठउडुमंकरःपू
 एवंपूडिपहउ।पूणएपकर
 दिउषाउयमिचउउ।उडिपू
 कूडिपादिउकुपहमभर

मातुरे^मरविरे^मपुडुगिठवे
 पूकूडिपादिउकुपहउडिपुगिपलठवे।उमयभुकनल्लेहूभाकरल्लेमुल्ल
 उहदिगपल्लुडकुपहमभरुल्लेः।मातुरेलेडिमुल्लगदि॥

भाक॥ येरभष्टिर्गोमः मेटा

यः वः दूरः उरुदुते उरमुष्ट

गलभिउयेगुः॥ सुदुगा

वदियषामेटा मयेन कगष्ट

उषारभष्टि रभापुटा मयेन वल

गभा। कृमिदुमेटा मिमभूमि

उष्ट, कागभद दुमरे मजगमक

मयगभा विदुष्टकेषु वल्लेषु भापुटमुप मगिउं मयग वल्ल उष्टः अविमृत्तुपुडी
उष्टः मष्टः यष्टव दगति

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

भापुटायेभापुः मभुमिडे

वलेबुष्टुतेउचलभाडामू

याः। यवैपं हल्लकं उवेर

इतिउमपदवभायिहंभापुहकी
गंभापुसुयैउरलभाडमिड
ऊः उखासपुदिऊउकुभा
उमऊमवलभुडे। यद्विह्वंउ
गुलभुडः सुल्लमिडमल सुसुगैरुमिडा। दगगि
लुग। भउहकुलकमि रडा मल्लगदभमगः परपुल्लु मरेभः 5मयंक
हभामिडभापुह सीपुडि वल्लल्लुगमुत्रपुमपभाड डिपुडि।
मल्लगंविभल १०२ भुमकमल्ल सपुकधरडा भापुहभापुडंयाडि। यउभु
इपिकंभः उहुकिनेउमहुकी यः॥ यवैपं हल्लकं सुल्लक सुमिह
एहरेकिडभा मभापुडकुहृष्ट यमुमचभापु डि। म पूभाहृष्टु ल्लेयः
मचभापुहल्लहियः ॥ ॥

दत्तात्रिभिः कलामल्लोकात्मकचक्रि। कलामल्लोकात्मकचक्रि।
गः कलामल्लोकात्मकचक्रि। कलामल्लोकात्मकचक्रि।
गुणः

इति सद्यः भण्डे न भण्डं मं भण्डि

भयवति, उक्तं च सुप्रसिद्धम्

इष्टाष्टसुते मरीशि

पुष्पक'क'कागय डव लक्ष

राः य इ उ रा मि र मि म मु डे जि

रैमिडुभाउपट्टमिडाकमिडुम

उमपिउपेकुचडि॥३॥

उमापत्रपत्रवति ॥ ३५ ॥
 एतन्मिदित्थं पदं कुरु च वरुण कुरु मितुं ॥ ३५ ॥ मया हिरण्यं कुरु विष्णु लभुः मया
 कुरु मितुं ॥ ३५ ॥ मया हिरण्यं कुरु विष्णु लभुः मया
 मया हिरण्यं कुरु विष्णु लभुः मया
 मया हिरण्यं कुरु विष्णु लभुः मया

सुगन्धवलीयगरिउड्डे, नमं उ

उभुतुं पूरुदितग धानठवती
महपिगमंड मपकवतं मधु लक्ष्मण
लक्ष्मण मधु मपिर, अलक्ष्म

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ शिखरं

हृदि ॥ अथ हृदि भागुल्ल सुभेष्टं लेख्यमिविभक्त्युत्तिम्
 केन वैलम्बि वदति पञ्चदशिकां
 वने ॥ अथ हृदि मित्रं उरु

जसुतः॥३३॥^३रुमेवसुमेव,रुतु

रभभा॥अइरिभल^३लीरंरु

रकमेदिपूतडा^३रगुलिपभा

पपवमगुल^३लङ्कपूविठगः

पवंमभमवयवकु^३मुमिदाम

लीवंरुंरुमेति विभलडा
लिकमेकीधिक पुहुउमर
कालंरुपुलीरिगिकर
डि।पुहुउयविपुलभुगभभु
गुल,उपकरकमुडापवेक
पुहुडा।उगुलिपमेति।अन
लाउवेतिअनलाममेहुः
अनलंरुहेडभरः॥

पभापवेति येभदिकरुः मभरय रुहु उतुपएउये।अयउमिहुरभाणगये
हुडांयभभ - लु उदपुहयदेः म भयः।अयउमिहुरपुयकिहिः
भभभर यः मयगवहु उरुग।रुय उ पदिदरे लुपमगल्लु सुयिहं
ययेःरुभि,उरयउमिहुर येभभु रुभमवयः दिडांउयउमिहिः।पुभभुप
गिदरे लु उमुगुललङ्कगल्लु रुः॥ पयमभयिहं।मंयिगेडिहु
रुवरगु येपुपुयेः पु पुभंयेगः॥
हुहुड डिउरुमिदामिभमगुलः कएक रिभममभलङ्कगः

म न कू म सु पि मी टा दि व दू म वे ङ उ डि य के मि मु र वि उ नृ ङ ॥
 अ व पू मे प म दी न मि डि । उ हू यो धा म पि म म र ये र भि डि मि डि ण
 यि । उ म् म् नृ गि कं पू दा ले लै षो गु ॥ न कू म् ॥ उ डि य म् म् क
 वि र ॥ उ नृ ङ ॥ ॥ ३ धा दि क र यः क र नाः म नृ कू म् अ न कू म् ॥
 म पि कू म् ग नृ च वि र गु ॥ डि म य ह उ वः ३ र पि र य कू मि ह य ह उः ॥ ३
 र वे दि मि म डि य ३ः किं उ मि ह मि । अ य कू डि प ये मि ह य ह ॥ म् म् म्

ॐ नमः पूरु जीव भव पू मे प म

मी नं मे ठ ये प म पि म म र य

क हू मि डि मि डि ग नृ गि कं पू

अ म दि डि प्र चै क म् कू ह य प

ग नृ गि कं म धी, अ य ल म

न मि म् कू ग नृ गि कं य मि म्

न ग डि उ उ म् अ पि उ उ म्

मि उ म र य कू म् अ य ल म दि

म है व न म ग डि ॥

हू यो धा म पि म म र य

ॐ नमः पूरु जीव भव पू मे प म

ॐ
३७१

उ गे म् गु ॥ उ डि म य ह

उ व म् ल कू ग ॥ डि उ म पि र य ३

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

कष्टं कुरु कुरु कुरु ॥ भगवत्

पुत्रं नैव कुरु कुरु कुरु ॥ भगवत्

सुखं कुरु कुरु कुरु ॥ भगवत्

भगवत् ॥ सुखं कुरु कुरु कुरु ॥

उत्तमं कुरु कुरु कुरु ॥ भगवत्

कुरु कुरु कुरु ॥ सुखं कुरु कुरु कुरु ॥

श्री
३९५

मृगद्विदिदिपुनमृदिदहृभाभप्रहृहृदं कंलविप्रनभुउदिहृदवृकुः ७५५ः
मभुग७५५भा॥ ॥ मृहृभ्रिदिमृहृहृदिमभभ्रुंमभ्रुंमभ्रुमिभ्रुउ७५५मभ्रु
कुं मभ्रुनहृभ्रुः प्रभाभ्रुपृभ्रुदिमभ्रुपृभ्रुहृहृदवृमृहृहृभाभ्रुनहृ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

कृमिदमृहं पुनरिहः पूमा

शुभमस्तु

मयेगपिकुं ममविपुलभु

॥ अथ गणपिकृतं ज्ञानविपुलम् ॥

उत्कृष्टमिति मयः प्रितम् ॥

ਸਤਨਾਨੁ ਤਿਲਤਨੁ ॥ ਸੀਪੁ

[illegible]

॥ म ह भ्रुति ॥ म ह म ह गत, म ह गत, म म म, म म म म म म म ॥

येषु रभेषु भवाम्भुगुणः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

गुणकडु प्रमुपं वडिः मरा ^{उहसक्यीः मरुजदीति}
 ४६: ॥ ॥

अयेमता ॥ गुल्लक ॥ ३५५

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

के बिना उह दि॥ १॥ २॥ ३॥ ४॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

उषा मिडिसेवा दीक्षा

बिष्णुः प्रभुः । उपनिषद्

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः शिवाय ॥
 ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः शिवाय ॥
 ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः शिवाय ॥

भमताकुमिमुपः। उषादि। म

उद्गः किमवलिउविहृमिं

[illegible]

कथं न भवति विषये

[illegible]

ਭਿਯਾਏ ਬਾ। ਸਿਭੁਏ ਖਰ

श्री

3.0

वृत्तमभ्यासैः यथापूजितं गेह

ॐ इत्तं, उच्चैः शुभाङ्गगुः

उमठवपिकहृदवकाग्रुडुः।

अप्रधुऊठठिक पमठ, नवीकड

ठ'मङ्गलकुपासीलग्नाभुम्भ

विगकावमभिकपूयहकुप

मुषिकमरुडुठरः प्रभासः। अप्रधुऊठ ठरः ७९ः मरुवीकडठठ
रेभायु लभासमङ्गलठठरः म उभाटः मसीलाठरः उ
दरठ मरुः मउवमलुङ्गपूभा गूभाठरः मगूभुठभा

उक्तिवमिडुपंभापटं, मपड

पुडुपंभिकुभाटं, मगूभुठवप

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

केवलः कथं गच्छति ॥ १ ॥
 कथं गच्छति ॥ २ ॥
 कथं गच्छति ॥ ३ ॥
 कथं गच्छति ॥ ४ ॥
 कथं गच्छति ॥ ५ ॥
 कथं गच्छति ॥ ६ ॥
 कथं गच्छति ॥ ७ ॥
 कथं गच्छति ॥ ८ ॥
 कथं गच्छति ॥ ९ ॥
 कथं गच्छति ॥ १० ॥

कृष्ण श्रीभार्ताः मिगमिदि एरनहुयकु ॥ ॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

पदत्रयगोत्रमापदयुक्तं
मृगद्विभक्तं
क ॥ ५ ॥ अत्रगुरुभुविभक्तं

क ॥ उ ॥ न ॥ म ॥ न ॥ न ॥
विष्णु भक्तगीतिः
न ॥ ठ ॥ नी ॥ टि ॥ व ॥ टी ॥ क ॥ ङ ॥ अ ॥ इ ॥ ए ॥ ओ ॥ ऊ ॥
अथमष्टपदिका ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 विष्णुं मन्त्राय यः श्रुत्वा रिम
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

या ह्यभयुद्योगे लुप्तयेः ॥ १० ॥

मन्त्रोदितैः ॥ ११ ॥

॥ वनपुष्पमृतीयास्तुतिदीपन

उत्तरीयैः ॥ १२ ॥

कथमितु नृपैः ॥ १३ ॥

कथं ॥ वनैः ॥ १४ ॥

३०२ ॥ दीपनमाम् ॥ विकलमस्तु ॥ १५ ॥

अशकभूतयेकवेडा। भाषा ७: ८

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

ਪੁਰੇ ॥ ਕਮਿਸ਼ਨਰ ਪੁਰ ਕੁਝ ਪੇਕਾ ਰਹੀ

ਸਿਭਾ ਦੇਵ ਰਸਾ ਕਥਾ ॥ ਏਕਾ ॥

ਮਨੁ ਦੇਵ ਮੁੰਦਿ ਕ੍ਰਿਪਮ ਨਰ ਮੁੰਦਿ

ਮਨੁ ਦੇਵ ਮੁੰਦਿ ਕ੍ਰਿਪਮ ਨਰ ਮੁੰਦਿ ਪਾਤਿਕੁ ਨਰ ਨੀ ॥ ੧ ॥ ਮੁੰਦਿ ਕ੍ਰਿਪਮ ਨਰ ਮੁੰਦਿ

ਮਨੁ ਦੇਵ ਮੁੰਦਿ ਕ੍ਰਿਪਮ ਨਰ ਮੁੰਦਿ

ਮਨੁ ਦੇਵ ਮੁੰਦਿ ਕ੍ਰਿਪਮ ਨਰ ਮੁੰਦਿ

ਮੁੰਦਿ

ਮਨੁ ਦੇਵ ਮੁੰਦਿ ਕ੍ਰਿਪਮ ਨਰ ਮੁੰਦਿ

ਮਨੁ ਦੇਵ ਮੁੰਦਿ ਕ੍ਰਿਪਮ ਨਰ ਮੁੰਦਿ

वसुभिः वायुं च दृष्टिः तिर मित्रमभीष्टं च दृष्टिमुक्तिं दत्तम् ॥

सुपमसिद्धिं कर्मकृतं

इति वायुं च दृष्टिमुक्तिं

इति वायुं च दृष्टिमुक्तिं

इति वायुं च दृष्टिमुक्तिं

सुदृष्टिं वायुं च दृष्टिमुक्तिं

इति वायुं च दृष्टिमुक्तिं

इति वायुं च दृष्टिमुक्तिं

इति वायुं च दृष्टिमुक्तिं

॥

कर्मिणः सुपमसिद्धिं कर्मकृतं

इति वायुं च दृष्टिमुक्तिं

इति वायुं च दृष्टिमुक्तिं

कर्म

३.८

सुदृष्टिं वायुं च दृष्टिमुक्तिं

इमभुंरुधूः
पपाड इभा रुधू सुडि र सुनिड र

विगलेरुनलेइहुभा लभा कुचकु

कुमुदीरमुडि मिवभ रुजं कुरुगर
अरव कुमपुमवेडालिकरुव पूरकु सुडि र यपः कुमुकलेउभा सुलल
वूठ संर सुगे हीम मेड विपड डि वि सुष्टा मेरुयग मरुमरुडुडु
मिडुः ॥

यतः कुमुकलेउभा सुभा ॥ कुमि

सुकुवा सुयपे हः पूरकु यिड र रुठु ॥

उषा डि सुपुडि रुठु यं मरुगेरुम

अथरूपीति॥ एकैकमुद्रमिवकुम्भापुकेभक्तकभासुयैः वक्तुमभापुमवृत्ति
 केयमंय। विषडिलकभाउरभक्तकपकवमउरविरोमकुमभासुयैतिमिहं
 यथमुद्रंमगुदमिहृष्टेमविरोमठवकुम्भमभासुयैतिभक्तकमभा

भुवन्मयः कस्ययंमिहपि

रदीकुम्भमभासुयैः अथमहृष्टपु

वक्तुमभापुः ^{वैकृष्टं} रदीकुम्भमभासुयैः मउरभक्तकभा ॥ ॥ मउरभा

उडिमीकहृष्टकमेगुलिनियै

भापुमउरभासुयैः ॥ ॥

कपु श्रीगल्लमयवृमः ॥ ॥

म
 उ. १ डिगुल्लिविरोमठवकुम्भमभासुयैः

[illegible]

पुष्पमण्डितमभूतिमकलाङ्कित

ਸਰੁ ਬੋਧਿ ਸਰੁ ਭਰਿ ਪ੍ਰਭੁ ॥

॥ यमुकुमहृषावकुमहृषा
यमात्रेपककवकुप्रयोगः उवाचैकजहन्ति विष्णु । वक्ष्ये वक्ष्ये कः । का

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३५ ॥
 विष्णुसहस्रनामः ॥ ३५ ॥

या, भावकेति. मुखादिना ॥ ५४३

त्रेधरशक्तिः कञ्जशक्तिस्तु १५५
१ श्रीलङ्का १०५

५८६३३३५॥५८॥५८॥५८॥

भारत
परकुलमिष्टुमिष्टुमिकु

उरौ वाभासे प्रियभा ^{किं कुरुतीति} उरौ
नैव नानां कदापि। ^{नानां कदापि} अकुंकितं ^{किं कुरुतीति} कुरुतीति

कुरुतीति नाना कदापि कुरुतीति।

भाभा कुरुतीतिः ^{किं} पुरा कुरुतीति

कुरुतीतिः ॥ कुरुतीति कुरुतीति ॥

कुरुतीति ^{कुरुतीति} कुरुतीति कुरुतीति

कुरुतीति कुरुतीति कुरुतीति

गुरुपराउत्तरायणवृत्तगुरुं मे मम

[illegible]

५८ भा. ५९ र भा. ६० ग ३: १५५

धुहमेवप्रमः ॥ सुकृदुतिगतिं
कैकविदुगुतैः प्रममउदुयिगजे

॥ ॥ कैकविदुगुः । कृतिविद्युत
कृतिगतिपविदुमिः ३५पेकनकउगकृतिमपम विमपुगुविद्युतमम ॥ १२
व नगउमविषयेहपारि व नगउमविषयेहपारः ग५

३३ कैकप्रममेवदुप्रमम ॥

किंउयैः सुकृपमिह ॥ मेरेके
सुहः सुकृप्रमः यदुकेभुकृमिदुनमुमदुमं ३५किदुमिदुमिदुमं ३५ ॥
कपु सुमकदुचः ॥ मेरेकेभुकृमिदुमं

३०७ वधु। मकमेकवरं, मादुमुकैक

ॐ क० म० सु० मु० पर० ॥ उ०

उपनिषद्वाचनं पञ्चांगं पूज्यं नमो भगवते वासुदेवाय
श्रीगुरुभ्यो नमः श्रीगणेशाय नमः

यूऽपि पूऽगुरु' हउभा के मल'

केमलाभवविभिपुर्वेदगुरुदिगीवृषठावचक्रमात्रपरप्रगाहवर्तितांभामय

परः परः सधः उभरकमिन्

^{१३} ^{ਖੋਤੁਕ:} ਏਤਿਵਸਤ੍ਰਿ ॥ ਤੁਯਾ ॥ ਸੁਪਮਾਸੰ

अनमङ्गुलद्वयं शुभवर्किकम्

四

लैः प्रलभगलिमुल्लैरिति

30-

वसुडैव कुटुम्बकम् ॥ केषां

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

उत्तमैश्वर्यमयं श्रीनरसिंहात्मकं

भक्तवत्सलं श्रीगोपीयापादपुत्रं

श्रीतय उच्यते ॥ मन्मथलालपुत्रं

मन्मथः मन्मथः मन्मथः मन्मथः मन्मथः

मन्मथलालपुत्रं मन्मथलालपुत्रं ॥ मन्मथलालपुत्रं

मन्मथलालपुत्रं मन्मथलालपुत्रं मन्मथलालपुत्रं मन्मथलालपुत्रं मन्मथलालपुत्रं

मन्मथलालपुत्रं मन्मथलालपुत्रं मन्मथलालपुत्रं

मन्मथलालपुत्रं मन्मथलालपुत्रं मन्मथलालपुत्रं

मन्त्राय नमः ॥ ३५ ॥ यद्यपि नमः ॥ ३५ ॥

यद्यपि नमः ॥ ३५ ॥ यद्यपि नमः ॥ ३५ ॥

यद्यपि नमः ॥ ३५ ॥ यद्यपि नमः ॥ ३५ ॥

यद्यपि नमः ॥ ३५ ॥ यद्यपि नमः ॥ ३५ ॥

यद्यपि नमः ॥ ३५ ॥ यद्यपि नमः ॥ ३५ ॥

नामः ॥ ३५ ॥ यद्यपि नमः ॥ ३५ ॥ यद्यपि नमः ॥ ३५ ॥

यद्यपि नमः ॥ ३५ ॥ यद्यपि नमः ॥ ३५ ॥

३५ ॥ यद्यपि नमः ॥ ३५ ॥

यद्यपि नमः ॥ ३५ ॥ यद्यपि नमः ॥ ३५ ॥

यद्यपि नमः ॥ ३५ ॥ यद्यपि नमः ॥ ३५ ॥

३५ ॥ यद्यपि नमः ॥ ३५ ॥

यद्यपि नमः ॥ ३५ ॥ यद्यपि नमः ॥ ३५ ॥

हृमुष्टमहंभाकरः, भाकरः

उच्चपुनः कलङ्क विकलेऽवतः॥

चतुर्विंशति उच्छ्रिताः मन्त्रः स च ह्येव

इन्द्र ॥ एकभिः सुभः सठि च वः भः

भा० से सभा भा म भा म यः वा ३
म कृष्ट मि उ मा मु सुं । अ क म न म डि वु म न म म म भा म न म वां । क मे रे र द ग ल

मः प्राडिभारि कष्ट रडुपयस्यम

कृष्ण॥ उम्॥ भिडका कगदमि

मृदुमिदं ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

वममामेड वरिठकगकगडिठिवममामे

पेदधकमनेडिप्रवे

ममामेगुधुःभाकुपुंम

इमि उडैकवमो।मममगुभीमगुभाविमउवामे डिठकमेधः ॥

लाभापिउववमिगुगउध ॥

मृदुधमः

अवंपपुगामउः मृकमहक

वदुदममउनु।उवेलमुदलयेमु दडिठमकं ॥ वलधपुमउगउडैकव

इदैमिदुमिडिउमिदुव पाद नुगुदव . डेपगगदुय मकमयम

मिममैरउउडुनंयम ठिवनवलनभापुनःसुडिः।

कम

मृधयःमममवःमाककःवि लीय मुमम

यमकम ॥ मममममम

उडयमकं मम सीमुपारुउउ

यारियउउ ३०० पयदेकं

मउयानपुव ३०० विग ॥

यमिहमेप्रकपामउवउउ

उडमममुपारुदुडियमकंरुग।पुषमिदिडीयाद विडिमुदिमैरुडुडीयमउ

रुपारुगुलं पुषमपदेयदिदिडीयपादेयमुउउमभापेगमयमकं पुषमपा

रुमुडीयपादे सेदुमुउउममं मेमम पुषमपाद सुडुकेसेड दडिठमउ

पदं विडीयपाद सेदुडीयपादेयमुउउमगुडेमर विडीयपाद सुडुकेसेड मरु

पुकेममप पदं दडीयमुडुकेसेदुमुगम पुषमपाद भिपुपिउउमपादिः उडै

वमदयमकमिडिकेमिगपारुडययमकंउउममकगिउउरुपुयुंउडिठकमेधः

ममिमे लपड लममुदं

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

३५४५

तीर्थारि पादार्ति संगे प्रकृतमे

कष्ट
प्र
३०३

प्रचलयेद्वितीये स ह्युत्तरं, मुपेक्षमथ म कमा मरुतु द्वा रं मरुतु द्वा रं ।
 प कुन उ द्वा रं लो कं वि द्यामी ॥ कस्मिन् द्वा रं भा न । उ द्वा रं कु रं ले मं ग मं म गी
 लं म प्र दं म रं म रं म प्र दं द द्वा रं म रं म रं द द्वा रं म रं म रं द द्वा रं म रं म रं द द्वा रं म रं म रं द द्वा रं ॥

उठगपि विविंसति कमाः मिका
 उठिनरुगावृत्तिः शिपल्लविं
 मता। मउपु म्म म्म रं म अ। प्रषम
 पममि गत बुवमि गमि मीयप
 ममि गत म्म म्म रं म अ। म ग य म्म
 म्म म्म रं म अ। म ग य म्म
 म्म म्म रं म अ। म ग य म्म

३५५ सं.

तीर्थारि पादार्ति संगेष्टुठगे

कह
पु
३०३

^{५५५}
 प्रचलये विहीयस हृष्ट उदर मयमय म कभा मरुतु द्वा रं मरुतु द्वा रं ।
 पकुत उदर एव लो वृ ति गी ॥ कस्मिन् एव भा द । उदय कु ए मं गू मं मी
 लं मय दं सु रं म रं म य दं द द य म्भु म म हृ द्वा द्वा रं पी दि म ती म्भु
 गी म र्क म्भु द्वा रं ॥

उठ गधि विविं सति ठराः सिका
 उठि नरा गा वृ तिः शिप म्भु दि
 मती म्भु म्भु म्भु रिं सती प्रथम
 पम्भु रिं गता वृ म्भु रिं गति ती य
 म्भु रिं गता वृ म्भु रिं गति ती य
 उठ वृ म्भु रिं गता वृ म्भु रिं गति ती य
 म्भु रिं गता वृ म्भु रिं गति ती य

स्वयः भृष्टादि कभादिभृष्टं प्रतु
 भृष्टं भृष्टात्कृमिदिउपंभभृष्टयः
 उद्यत्तमि त्रेवपादिभृष्टादि ठग
 भृष्टादि ठगोपुनियते मभृष्टे
 वृत्तिगितिप्रदुत्तमभृष्टे भा। उद्यत्त

श्री कृष्टात्तज्जुत्तमिदिनभृष्टे
 ३०५ लक्ष्मणत्तमा ॥ दि. २२ इममदि

ਪ੍ਰਬਲ ਭੰਗੁ ਤੀਧ ਭੰਗੁ ਸੇ ਹੁਖੁ ਤੇ ੩੮ ਮੰਤ੍ਰ ਸਃ ਪੜ੍ਹ ਗੀਤਿ ਕਾ ਸ਼ੁਰੂ ਪੁਰਾ ਮਿਖਮਾ
ਕੁ॥

ਮਨੁਸ਼ੁਤਾਦ: ਮਨੁਸ਼ੁਤਾ: ਤਾਰਿਕਤਿ ਪੇਖਿਯਤਿ ਤ ਮੁਸੀਬਾਤ ਮਾਪਾਯਤੀ ਤੇ
ਗੀਤਿ ਤੁੰ

यत् ॥ भक्त^१ र^३ भयभक्त

सर्वभूतिना विदुः सद्गुरुमिहः गणयन्मतामृतमिहः

पुविपमोपमो भवारीक यमुदमः

पुष्पमिद्वितीये इति यस्मिन् उक्तं स ह

ਮਾਯਮੁਤਮੰ ਪ੍ਰਥਿਵੀ ਲਾਯ ॥ ਵਿ

अथंभन एवमभुनयः।

नयमेनेयडाभापादिन, वि

कैशरीयः प्रपञ्चः

नयननेयड चम्पामिना, म

[illegible]

कालवेदीयतमावभासं, म

श्री ३३ भाषा दीउरु भोय

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ठ क क ~ क क म म ~

एवैरिगठितं पञ्चयथैव विविद्विधं नमः यमपुत्रं नृपं कदिक
नमः विपुलं नृपं ॥ सुखदं विमिश्रं, नमः कीदृमं नृपं ॥ मरुभ
रुद्रं मरुभं नृपं ॥ मरुभं नृपं ॥ मरुभं नृपं ॥ मरुभं नृपं ॥ मरुभं नृपं ॥

एवैरिगठितं पञ्चयथैव विविद्विधं नमः यमपुत्रं नृपं कदिक
नमः विपुलं नृपं ॥ सुखदं विमिश्रं, नमः कीदृमं नृपं ॥ मरुभ
रुद्रं मरुभं नृपं ॥ मरुभं नृपं ॥ मरुभं नृपं ॥ मरुभं नृपं ॥ मरुभं नृपं ॥

परस्त्रीकृतः भक्तमुद्रं च लज्जितपत्नीति भक्तः कुरुमतिप्रगल्भं भक्तं च ।

कं घम दी घड घं दी पूं ड छ छ उ म गूं म गूं पू क्रियया वृ वृ उं मा न म
मा रं ग डि द स ति भा र मा रं य छ ठ वृ डि प व मा ॥

कं चमदीयः चमदीयः चमदीयः चमदीयः चमदीयः चमदीयः चमदीयः चमदीयः चमदीयः चमदीयः
चमदीयः चमदीयः चमदीयः चमदीयः चमदीयः चमदीयः चमदीयः चमदीयः चमदीयः चमदीयः ॥

वलमभमिउः॥मङ्गमङ्ग^M

वृद्धमवलम्बितुं गच्छामि मय

[illegible]

महेश्वर

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

मन्त्र कंठं चिह्नं च मयि तु चिह्नं च

पुपगर्हि परगर्हि उभानिनीरु

यदङ्गीकृतं पत्रं १५५६ ईस्वीय १८७५ ईस्वीय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

इ. उ. व. ग. र. म. व. ग. र. म. वि. पु. व. म.

पिउडा भूउडा भूवनेरगडा ॥

304

एवं वेगि तु भद्रं सुखं ज्ञातुम्

603

ममपर्यन्तं लिङ्गं ध्यायन्ति पुरः

यविठडिबमनवंठममधुपु॥३॥

[illegible]

५:

शुद्ध गदर कपालं परिष्कृतं, विमीलं



306

गड
इहं वसुधैव कुटुम्बकम् । अथ
अथ यं गणितं विदुः स भवति ।

गिषिणेवन्मभिविम्बिउवडि वयंक

परिविहृमिमुं पदठहोपदसुखः पृषुकेडि
रंसे प्रुंमुगः

प्रवरभी ॥ पृषुकडुमपाउं ऊपि डविउधिडविमुधः
परिल्लुयडु

उविम्वधपरिल्लवंरुव, विलम मडिक्कुर गडिचुपुंम॥
ठिनेमकुल्लदः डनरुंरिल

इरेपगदवंममुडिभमभक्कय

निद्रमरसुधेयवा हकीडि ॥ मडपुल्लयडीडिभियं पूषभेकरमरुंर
मडरमा ॥ ठडिपुक्कविलेक पंभकेडुपुल्लयडीडि
चिरमरुं

मडरमा ॥ ठडिपुक्कविलेक

पुल्लयित्रीसील्लदुलमपसिनी, पु

गलभुरडं ममठिविगडैडीडि

महर्षि उवाच ॥ अथ कुरु मे सुत ॥
 यथा श्रुत्वा त्वं मे वदस्व ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

यवकुडि, नमकुडि, मिडुल्लं मं मा गडा। उमर मं
उमर मं मरिह मूयं
मिराल्लं मर। एर ररः ॥ १५ ॥

पुनरुत्पिडुडुभावा ॥ कुरु मरु मंभरः ॥

भरु सुप्रभरु पुजु मिक मपकरु डडिगु लः श्रीरु डडि
मिक मरु सुप्रभरु मकडु म

मृष्टादिदिशरुयतीदिदिदि। मृष्टिगलविनेषमुहवे
रुष्टिउडिमा मृष्टयं यंदिदिमपुहययेः उषाहमाड
ल्लिडिमपुहययेह

मृष्टमृष्टः मिउरुमिमात्रुमिउमाउषा
इंमचः सुं रगडभचसुं

विहकिहपुविहकि म॥ भवमदममममुंरुव
मृष्टः मचमुमिडि॥ यमुपक'गमुउयेः मममु

मृष्टउडुः नयपकरमामु मृष्ट
मृष्टउडु मयामि सुगकुमि॥
पहउमचमुम मृष्टमयामिउरुवउमम॥
चमुकमपकउषामुहउडुः हदमप हसु उपकउ
माममृष्टयपुपय रुवउरुहउरुहउधिनवमठ
उषामुयामिपककिरुउ इंदुडिउरुविमुय मृष्टहउम
मृष्टमृष्टहदीमह वउ॥ नवमपीडि मृष्टकिनरु मृष्ट
मृष्टमृष्टः मृष्टि हउहउ मृष्टमृष्ट मृष्ट
हउदिडि क हउ मः ॥ उम॥ यमठउरुगउम
हउहउ ३०५ हउग यः ममृष्टहउमृष्ट मृष्टमृष्टि
उमपमृष्ट मृष्टहउमृष्ट मृष्टमृष्टि

मउकेरी मउडीडिमउकेरिः उमुहवमुउडेवि
पडिउडेउमउ॥ मृष्टिपपहपविहममृष्टः पडि
हपहमृष्टहमृष्टि

मउकेरि र हू लहु डिप जयडी डिमउ केरि रः ।

पक चेरक लकमः मउकेरि ३५५५ ५५५५ ५५५५

मिउं विउं विउं पमुः मउकेरि ॥

मउकेरि मउकेरि मउकेरि मउकेरि मउकेरि मउकेरि

मउकेरि मउकेरि मउकेरि मउकेरि मउकेरि मउकेरि

मउकेरि मउकेरि मउकेरि मउकेरि मउकेरि मउकेरि

मउकेरि मउकेरि मउकेरि मउकेरि मउकेरि मउकेरि

मउकेरि मउकेरि मउकेरि मउकेरि मउकेरि मउकेरि

मउकेरि मउकेरि मउकेरि मउकेरि मउकेरि मउकेरि

मउकेरि मउकेरि मउकेरि मउकेरि मउकेरि मउकेरि

डिउउमवसपेउसपसडि, डि

विपुयभउलङ्कभपुगमिउ

हैगिडिकपभयंसवुलङ्कः॥३

मुउ॥२६६पगुलङ्कमं

मवुअगउहुवयेविकममवय

वुडिरकाहुभेववुवडिपुउ॥अपदि

सी

कपुहुयः मवुयेधः गारुहुयः मवुगुलः ३४

३०० कपुहुदिगळकुहुउपुभा २४५

मवुयेधः पूहुयः मवुगुलः १३५भायः १ अऊनङ्कः ॥

॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

+ दः अथे भिउ अथे अडिउडेडि

श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

+ कुरुपभा ॥ उषादि, यषा, कभनमिबभ

दीपुडो भइल बाभरै लुगल ५५५ मंद ॥

ਧੰਮਮੋ ਲੋਕੇ ॥ ਕੁਸਤਿਤਮਿਤੁ ਦੇਗੁ ॥ ਮਾ

ਮਾਮੁ ਕੀ ਪੁਤ੍ਰ ਤੁ ਤਿ ਕਿਯਾ ਮਾਮੁ ਤ ਰਕਮ ਮਾਮੁ ਰਾਤ ਪ

हृत्किंवा भासु उठय भासु र। उपभा। उष्टा, भासु दूट भूपि

महक नक नैरुत मक नः अह मति

मकलकलं पुरमं उरुमं मभूतिपुं सुविभु मकलकलपु
मिहमं मवसुध

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ਮਿਕਟੁ ਸੇ, ਸਕੁ ਆਤਮਾ ਪ੍ਰਿਯਾ ਆਪਣੇ। ਤਕਾ ਆਤਮਾ ਪ੍ਰਿਯਾ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३५ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

ममयेकिउ। सुसिहमवभाइंभाभाहमिह पिमभुवडः॥

उत्तमिभभुवः३ पाथिभुवः, इत्यकमन्त्रमि
नष्टं प्रकृतं

पि मभुवतः सकम निविदेमुप मिहृदिः वेदइ। यइम

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३५ ॥

[illegible]

ॐ त्रिंशत्तुं प्रत्येकं भाग्यं विधिप्रयत्नः प्रत्येकं भाग्यं ॥

मनु उ मने लह मड डी वम मु भू ॥ उह रे ।
 भुने डि । मुके रुं रुं । पहे वम भि मने रु उह भगः मड उ प मे य भू भू क
 र लि क भू गः क वि रु प उ प भ ग रु पि रु सु प ह डि रु कः म धू मे रु रे
 डि रु ल रु ग भू रु क म रे सु भः ॥ म व ग ग व डी म भू । दि व म सु रु ग भू
 म रु रे व ग डि भू रु । उ घा पि रु म भ ग भः । म व ग गे ले डि रु म भू रु
 ग । म ग म रु उं व म भू रु : क भू क उ व दि व मः प र भू ग डी डि रु भू रु

प म डि टा ये र गौ दि व मे ग सु डि प सु कृ त्वा डि । एवं दि व द्वा म डे ग पि म म
 ग मे र ह रि डि ॥ ॥ अ इ म नु दि व म ये क प मे य ये र ग ग व डी ह रि सि धु
 दि मे ख ल म दि भु र य के ये क प म र कृ त्वा ये व र क र भु डी डि रि डि म म
 मे तु न लू रः सु ख पु डि हे ह डि डे डः सु ख ये डि अ म ले प च डं । वि सु ले म ॥
 सु जी र मि रः सु दी रः डं म द्वा मि र म जी रं व म कि दी रं दि दी रं म । वि ख म
 रि म ह्नु म धिः । वि ख म अ भि र म । अ सु डः श्री कृ ष्ण ग डि सु ट सु । अ इ ।
 अ इ वि र गे न लू रः सु ख पु डि हे ह डि डे डः सु ख भु ड र द्वा म इ म पु रं गी ।
 उ मे र मे डे व म ड क के म वि र डि कृ प क सु ख पु डि हे क म म
 पु रं ग ल भु ।

क के म वि र डि कृ प
 क सु ख पु डि हे क म
 म मे कि वि र गे पु प

सु ड र न लू रः । डि मे सु डे र न लू र म पु र न कृ त्वा डि

पु रं ग कृ त्वा डि
 सु खः सु पु रं गी

के यं र यः कि कृ त्वा मि द्वा म इ म न लू र डि ।

इ इ वे डि म र सु के वे डि सु यं म प लू र कृ त्वा म र पि म र लू र क रि पु डि कृ मं ग म
 गि म र डि डि म र कृ त्वा म र लू र उ वे र कृ त्वा म र
 म र लू र वि र कृ त्वा म र क रि पु डि कृ मं ग म र मु इ र दि मि
 र म ॥

क प इ उ डि मे र न लू र कृ मिः । अ कृ म प पु रि

उ उ उ इ उ यं म र कृ मि डि मे र म र पु म री म

पिः वेदे उत पुनः किं हेतुः, रमा

विष्णुक धनुष रश्मिष मधुपेक्षु पिदु रसादि पनेषु
मुष्णिग रष ॥

३ प्रभादी नमल्लुगु। मरुगु ~ दिवा ~ गुरुमादिगुरु
दृष्टि ॥

ਮਧੁਕਪੇਖਯੋਗੁ ॥ ਦਿਖਤਾ ॥ ਸੁਕੁਗੁ ॥ ਦਿਖਾ

नकुलं सद्यः ह्येव भ्रुति भ्रित्तुधि

ਸਭੁ ਗਤ ਹੁਕਿ ਸੁਤੁ ਮਾ॥ ਕਿਹਿ ਕੇ ਅਭੀਯੋ ਸ

बलविशेषोऽप्युपदिष्टरूपेणैव

ਸਰੂਪ ਦੇ ਪ੍ਰਮਾਣੁ ਤੇ । ਤੁਰ੍ਹਮਾ ਨਿਖਰੈ ਵਿਸਥਾ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

[illegible]

2

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
उत्तरेण मन्त्रेण वासुदेवाय नमः ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २१ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २२ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २५ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ਸ੍ਰੀ ੴ ਸਤਿਗੁਰ ॥ ੴ ਸਤਿਗੁਰ ॥ ੴ ਸਤਿਗੁਰ ॥ ੴ ਸਤਿਗੁਰ ॥ ੴ ਸਤਿਗੁਰ ॥

ਭਿਤਮੁ ਰੁਤਿ ਅਪਾ ਨਗੁ ॥ ੧੩੯ ॥ ਰੁਤਿ ਮਿਤਿ ਨਾਗੁ ॥

विष्णु विडिम्भ मु. पटलमय, कुत्तप

श्री वाङ्मय मय

ਮਮ ਦੂਰਤ

सुखमयः श्रीमहादेवः

गलैकः भभभगिगप्यभुगइवडो॥ ३॥

विदिउविदिउपमयमय
इदविदयमय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

उद्धिउधल मुजीउयभ

मृगलोकंतिगभीष्टदुःख

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

३ किउं सी एके: ५ को ५५

[illegible]

त्रिगुणकयः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ਪਾਤਕੀ ਤਰ੍ਹਾਂ ਮਾਨਸੁਖ

ਸ੍ਰੀ ॥ ਤਤ੍ਵ ਤ੍ਵ ਪ੍ਰ ਆ ਧ

मयभरं नृगजेकंभ

भारत इत्यादि यसी भुक्त भवेत्तु इति १५

ਮੁਕਤੀ ਦੇ ਪਾਤਰਾਂ ਦੇ ਨਾਮਾਂ ਦੇ ਸਮੂਹਾਂ ਦੀ ਕੁਲ ਸੰਖਿਆ ੭੭

महामुनी श्रीरघुपतिदेव

ਅਧਿਕਾਰੀ ਅਥਵਾ ਅਧਿਕਾਰੀ ਦੇ ਨਾਂ
ਮੁੱਖ ਮੰਤਰੀਆਂ ਦੇ ਨਾਂ ਦੇ ਨਾਲ ਹੋਵੇਗਾ

— १११ —

लक्ष्मणमुदयानावातु क्रि-दृष्टान्

॥ ... ॥

मयल्लु मयल्लु मयल्लु मयल्लु मयल्लु मयल्लु मयल्लु मयल्लु मयल्लु मयल्लु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

... यथा न लेकोटि मुद्रा गङ्गा ...

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

...

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मूलिकरालः उद्गतेरुमाकुरितुः

मकमक इति पपमये लभला मभा कृजे ॥ ०१

[illegible]

ਪੰਮਾ ਏਕਾ ॥ ਸੁਤ: ੫

ਮੁਕਤੀ ਸੁਤੁ ਪੁਰਿ ਭਗਤਿ
ਸੁਤੁ ਪੁਰਿ ਭਗਤਿ ਸੁਰਿ ਭਗਤਿ
ਸੁਤੁ ਪੁਰਿ ਭਗਤਿ ਸੁਤੁ ਪੁਰਿ ਭਗਤਿ

॥ विष्णुं नमस्कृत्य ॥
 गिरिमेधुः । उगरेडं मन्त्र
 मन्त्र ॥ ॥ कुरुगिरि
 एषा गिरि उगरेडं गिरि
 उगरेडं गिरि उगरेडं
 कुरुगिरि उगरेडं
 गिरि उगरेडं गिरि

श्री गुरुदेवकी ॥
राज्येति ॥ मरुमुकेकम्

॥ सुमिरन्तु ॥ उपमा
सुमिडिकम् विलम्ब
मरुत्तेप उडिदिष्यम्
यद्यद्विष्टप्रयमे उडिमृडे
उमस्तुमस्तुडीतिभज
उरमस्तुलेधः मरुधिक्रुष्य
॥ अजित्तेप उडिअड्येः एम
गमस्तुडीतिमुक्ते ॥

[illegible]

[illegible]

सुनंरुः प्रभुद्वयमेवम्

कलंडां गडा ॥ १५ ॥ हुमै वृषदा मिले

२७

अनादिपुत्रयः सन्निवृत्तम् ॥ ॥ १

मङ्गल लङ्का भा ॥ म मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥
 ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥
 ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥
 ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥
 ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥

म मङ्गल लङ्का ॥ १०

ह मङ्गल लङ्का ॥

ह मङ्गल लङ्का ॥

म मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥
 ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥
 ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥
 ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥
 ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥ ह मङ्गल लङ्का ॥

श्री
 ७३५ ह मङ्गल लङ्का ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

संस्कृत-
विषय-
विषय-
विषय-

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विषय-
विषय-
विषय-

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विषय-
विषय-
विषय-

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विषय-
विषय-
विषय-

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विषय-
विषय-
विषय-

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विषय-
विषय-
विषय-

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विषय-
विषय-
विषय-

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विषय-
विषय-
विषय-

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विषय-
विषय-
विषय-

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ शुक्राभमभुनिदभुनिदिपयैछेतिम

मनुचरिपत्रम् । सुगोपितुं उद्भूतं

[illegible]

कृष्णवल विहरी उरका भूति उर

कथानिक 'भूकथानिक'

वन्द्यभद्रमिक गतिक पालिकेयमे

श्रीपादुपिपं वृत्तं तिमरुडी मङ्गलभक्त्युत्तमं

ले, वृत्तुभिः सुखपरिमलं लङ्कितं

॥ मभित्तु इह मङ्गल कथा ॥ अथ

उत्तरादिपाठः पत्रः १०००

कनकवनिचदः॥ श्रीगणेशाय नमः

यस्मिन्नेकस्मिन्मरिचविड्डो ॥ कर्मिन् ॥

३३०

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

उरुकरुमविदितुपकंयष्टा ॥ मरुतुउरुउरुउति॥

उरुकरुमविदितुपकंयष्टा ॥ मरुतुउरुउरुउति॥

विरति॥ यष्टा॥ मरुतुउरुउरुउति॥

उरुकरुमविदितुपकंयष्टा ॥ मरुतुउरुउरुउति॥

विरति॥ यष्टा॥ मरुतुउरुउरुउति॥

उरुकरुमविदितुपकंयष्टा ॥ मरुतुउरुउरुउति॥

विरति॥ यष्टा॥ मरुतुउरुउरुउति॥

उरुकरुमविदितुपकंयष्टा ॥ मरुतुउरुउरुउति॥

विरति॥ यष्टा॥ मरुतुउरुउरुउति॥

मरुतुउरुउरुउति॥ मरुतुउरुउरुउति॥

मरुतुउरुउरुउति॥ मरुतुउरुउरुउति॥

६५: ॥

ॐ सिद्धं भव्यं ॥ निम्नं सुसुभा ॥

विष्णुलक्षिकेति

यष ॥ यष ॥ उरुग्रीवः ॥ निचुमि ३

अडिगीउपनिषयङ्गापीकनुंरुंमूउ

अपिपुनः पूजयति यः ॥ अनिमं यः

३: अपिडिउर देवकुठि वं पूर उं

५ मल्लिकार्जुनः
मल्लिकार्जुनः

मउद्वाचनगानिः सुमलाडकन

मालाउपमरउ॥मालपमममम
मालाउपमरउ॥मालाउपमरउ॥मालाउपमरउ॥

लीप भाव सुवर्ति। यस्तु॥ अलिपमिडमि
 मुक्तभा भाव। उपमीयेतरेक नय भावैरेक भाव
 वे...

[illegible]

Public Domain. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गोदाभा
प्रीतिविभक्तमप्रीतिः विरहः प

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गिः। प्रवादिः कवलमभममेली

लिपवंसियाः मझुभभउभगपू

भवरहीदुकिभनरैगएरएरडि

वीगवैगिदनिउवैठुमभुडएः॥प्र

इएयएरडिजमववगुडएरडि

पमभमिडमपिमिपुममिपुम
रमकेमुकुंरुडि। उइ मिपुमकेपुमभरिउमुकुंयष॥प्र लेकिकेडि॥
मजममवलेकः मज लेकः ५ लेकः ५ म लेकिंले
काजीउ। मकुंम ककुमेठ लेकिंमकलकपूकमिउएगरेमः
रउमकुगडमिवपूममिहुंमकुगकुंम मे वयः। वेएम। वंमेयरकुंरुडि
उडिवंममेवडे मय गडयः मुयउरुवमंमभुडगुंरु
हमिपूहं। मइ ३३७ रिमव यव सिवममेवडे वंकुपवम सुमेपः
भगभम ३३७ गुरुगुपेपलिपयः॥ ॥

कैटुक ५५ इति निगदिष्ट निगद्युयं
यमुत्तमं भवति इति ५५ कैटुक ५५ यमुत्तमं भवति

ਠਕਾਣਿ ਤਿ ਪ੍ਰਭੂ:

विष्णुमहामेष्टदोऽसुखं भजतु यः कृपा।
समालास्यं भजेत् किं कुर्यात्

उत्तर मल्लिकार्जुनः ३ डिग्री, भा

लकुपकमपिपगदगितं सुधूह ॥

संभवेत्यदि, वलिनं संकभलभूपि

मुड, नमः कृतिः ॥ ३३ ॥ अक्षयः पूजा
पुष्पिलभू

[illegible]

मङ्गलम् पूजयितुं नमः

३. मिश्रपत्रमयं यं परिभाषितं भाषितं भाषितं

सिप्येयमिडिधुडिपडुः ॥ एवमियं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ एक उ प्रीति पा ॥ ५५ ॥

॥ कवनेवमन्त्राय नमः ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

...
 ...
 ...

मृदुल उरं मईपमेयकुपायललकुः। वरुमं ज्ञमिमागल
 वृलनं म॥ मृदुललकी मरु विमेष मभाभुदपुमु
 गयउपभायकुपायः ककुयाः पूतीति मिडि॥
 एकदलएककुवामकठराभि॥ ७३

मृदुलमु मंभुद उपभापरिकल्पक

विरजललकी मभादिरि मं ज्ञमिडि। विरजलं मृः भूतुकरं मृदुललम
 मृदुल व मंभुद य इपुभापरिक ल्प कठवडि। मरिड ज्ञम
 एव विरजलं मृभूतुकरं ॥ ७४ ॥ कृमं ज्ञमः मंभुदविडिम
 मृदुललपललकुः। उरमंभुद मंभुद मृदुललमु मंभुद उपभापरिकल्पक
 विरजलं मंभुद ॥ ७५ ॥ उरमं ललकुमं च मृ॥ मंभुद मंभुद
 मृदुललवमः कृमल विमय मडिः
 मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद
 विरजलं मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद
 विरजलं मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद
 विरजलं मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद

मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद

मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद
 मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद
 मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद
 मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद मंभुद

प्रचपरावृत्तमभु ज्ञेयपदुं यथा उतुपेयमा गउरल मेवं मद्रुअटवंसुवल्
 र भिदुपभायं पटवभा ॥ कसिदुमधुतुल्लुगेयभिदुमुः ॥ ३३ ॥ कुडयडः
 निगपे ह्ये चकुयिदिभु प्रुतिविभुव वेदुधुतुवडि। यइपुऊउवकुऊव हउउ
 भविपुडउमभुतुपपडिभुन। विरुजरेव। मधुतु उहः ॥

मद्रुअटवंसुवल् र भिदुपभायं पट
 पटकुडिः विरुजरे। यथा उतुयडीहदि ॥

वहडि ॥ यथा ॥ उरुयडि विउउव

मिगल्लुवदि मद्रुगेदि मणविद्या

डिगभुभा। वहडि गिरिगं विलभि

य ॥ सुयपरिवारिउवगल्लुली

कुरु लभा ॥ मद्रुकवमभुलीन मद्रु

उइमसीभि प्रु डिगल्लुलीन मद्रुसी। मद्रुगल्लुम भुविहलीन
 यवभुतुगु ३३३३ वहडीडिउउमु मीभिदुपभायं पट मिगि
 वहड मभुवलीन मद्रु मीनीन म वगमयडीह डिमवय। विहकु
 रियमुदिमडि ॥ ॥ भानुपदिम मद्रुयउ हडगल्लुयथा ॥ देकुडि
 डीहडीडि। डिडीहडिउडुमि सुडिउगल्लुवडीकुल्लु। दीहंलिल्लु यि
 थडि। न ह्यिउमि सुडि। मद्रुवदुभा गउरल भिव समिकुगल्लुमि व। म
 नल्लुहमिव। हनु ल्लुहमिदुपभायं पटवभा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

महेश्वरः भगवन् पद्मेयस्य महामहिम्नो मेयस्य । महेश्वर उति ॥

प्रवचनविनैविनाम ७९ ॥ महेश्वर उकन

महेश्वर उति प्रवचनविनैविनाम ७९ ॥ महेश्वर उकन
महेश्वर उति प्रवचनविनैविनाम ७९ ॥ महेश्वर उकन
महेश्वर उति प्रवचनविनैविनाम ७९ ॥ महेश्वर उकन

महेश्वर उति प्रवचनविनैविनाम ७९ ॥ महेश्वर उकन
महेश्वर उति प्रवचनविनैविनाम ७९ ॥ महेश्वर उकन
महेश्वर उति प्रवचनविनैविनाम ७९ ॥ महेश्वर उकन

उति प्रवचनविनैविनाम ७९ ॥ महेश्वर उकन
महेश्वर उति प्रवचनविनैविनाम ७९ ॥ महेश्वर उकन
महेश्वर उति प्रवचनविनैविनाम ७९ ॥ महेश्वर उकन

महेश्वर उति प्रवचनविनैविनाम ७९ ॥ महेश्वर उकन
महेश्वर उति प्रवचनविनैविनाम ७९ ॥ महेश्वर उकन
महेश्वर उति प्रवचनविनैविनाम ७९ ॥ महेश्वर उकन

महेश्वर उति प्रवचनविनैविनाम ७९ ॥ महेश्वर उकन
महेश्वर उति प्रवचनविनैविनाम ७९ ॥ महेश्वर उकन
महेश्वर उति प्रवचनविनैविनाम ७९ ॥ महेश्वर उकन

पम ॥ अमेकेवविमडिनुपुः प्रक किमदप

पुविमडिः ॥ ^{१७} अत्रलवगएसीरुतुनरम

मादिग डिमीममु दिमम दिमिगपुये

रसिउममोमषविधामव, नलिनीवदि

प्रश्न ल सी प्रहृडीममदिडि। अइ न ह ल। अकुमिरेदभाए लपमं
यमपम ॥ ॥ उषयक ५ ॥ मनेप म डिरे मेयंयइ अकंरभुतेकुमा
मते मभुमा ॥ ॥ उह वित्रमण लपम ॥ ॥ उयमीयेडी केमपम
इरेकुमामते। यषामुमालडेवउनी। यवकुलेर डिमिनाममे। दमीरकुलाना
भा ॥ ॥ उह ५ डि विरेवउ डि ॥ ॥ उमि विडिमाण लपम।
ठिवा कुवरयनारमः अवेमरेकए लपम प्रह मनेपमयष ॥ ॥ उह
वययइइउ डि ॥ ॥ अइ ययइ नम रदि लह ल मुकेकुमि मण
लह उवमभारुपु मचलक निडमिरी ॥ ॥ उडि मनेपम ॥ यषउ
मिडि प्रचददिडिमा लपमवड ॥

दठ ५ प म एषाएम लपमयषउ मपमयषपम
कित्रवाउमित्रकस

रि

यषउ ॥ मिडि ३०

५ रुतु नृदिमेधमभाष्टरुतु नृदिवपुत्रुत्तु प्रसंभयव ॥ ११
लोहप्रकुचिउरेहमि॥ ५ रुती विठवरः कश्चि रपकविमपुपलीवन

मिहकसिताप्रपुत्रभरं॥यनमुहु
निधुलमुपदंस गवेला

सुष्टु उपोषिकं पुनः प्रपन्नं च सुष्टु पत्रम्
कृत्वा विविधं कृतम्

अष्टौ पादयाम्यस्तुः सः
अष्टौ लीलाधिकं लेखितं विविधं
अष्टौ लीलाधिकं लेखितं विविधं

नमो उरभगवते नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

वगिपगिउमगिउंभावेहः किंउवम

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

सुवर्णगुः

परैकुतुलंरीकनभधुवदकुलर

कट्टः ममजः

नैकरैयुयनैकलः॥कमिडुपुपे

कमिडुपुपे ये वेरुम
भुवेमडि मधुमुडुमंम
यय॥ कभुंठेगिडि॥

मशमे उरैमदधुमे. उरैकुरैयः प
वयय॥ कभुठः कषयभिदेव

रुउडि वययमभुवप
रुपुमुडुडिउदुमय
कषयभीडिपुडुकिः नवउ मपुपे ये पुडीडिः॥

कडकंभविदिमलैकंवेगगुमि

मलैकः मममधुमुडुकिः मममधुमुडुकिः

कभीरेपुडुकिः ॥
मिडुः ॥

ववविभापुविदिउंकभारिउंकपु

वमरेडि मममिडुकिः मममिडुकिः
मममिडुकिः मममिडुकिः

कषयभीडिपुडुकिः ॥
मममिडुकिः ॥

उावभरउवएमुमपुगएवःभव

उममभुवउ उममभुवउ उममभुवउ
उममभुवउ उममभुवउ

मममिडुकिः ॥
मममिडुकिः ॥

उममभुवउ उममभुवउ उममभुवउ

उममभुवउ उममभुवउ उममभुवउ
उममभुवउ उममभुवउ

मममिडुकिः ॥
मममिडुकिः ॥

उममभुवउ उममभुवउ उममभुवउ

उममभुवउ उममभुवउ उममभुवउ
उममभुवउ उममभुवउ

मममिडुकिः ॥
मममिडुकिः ॥

उममभुवउ उममभुवउ उममभुवउ

उममभुवउ उममभुवउ उममभुवउ
उममभुवउ उममभुवउ

मममिडुकिः ॥
मममिडुकिः ॥

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मन्त्रैवमन्त्रैः पूजितैर्वसुधाभवि

ਮਾਸੂਖੁੰਦਾ ਅਰਮਤੁ ਤੁਹਮਤੁ ਹਮ

[illegible]

बुधो ॥ उषां भगवत्पदं श्रीं सु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अथ भविष्योत्पत्तिः

मृदुली तु मुदिमं मुदुल्लेखे पमेये पमा र हवः उषा उषा र यिकयाः कुमुदि
 तु मुये प मेये पमा र हवः र केव लमे उये कि तु विजाती डि विजा ल ल ह मृदुल्लेखे कु
 मृदुल्लेखे प मेये पमा र हवः र केव लमे उये कि तु विजाती डि विजा ल ल ह मृदुल्लेखे कु
 मृदुल्लेखे प मेये पमा र हवः र केव लमे उये कि तु विजाती डि विजा ल ल ह मृदुल्लेखे कु

यैषा ॥ इति सु पूरव उषा विवाति सुमरु विरु मे सुदुभाभा तु कु
पुत्रे पुत्रि व सु पमा म कु विमु
 मने मने रु व सु लिताभा मुले केदि पुत्रि विमु हव सु पू उ सु कु ॥
सु पू उ उ डि ॥

दिमं मेचिकम डि कु भुं कु प्रभु
 पधम गृहे ॥ वेणु ॥ यषा ॥ उका मृदुल्लेखे उयेः उषा विमग
रुड, भिउ उ ये मु पमा र प मे
य हव, डि मु पु डि विमु हवः
 कवम दमक म मः करं पाल केव लमे उये मुषा मुगु गिति
हिया कु पग म र ल ह मृदुल्लेखे
 त्रिकभा विनी पतः हलः परे पं विम र मृदुल्लेखे वेणु पु डि विमु कु
मृदुली डि प म ल ह मृदुल्लेखे म
मृदुल्लेखे उ कुः ॥

विदुमं
 मृदुल्लेखे मृदुल्लेखे मृदुल्लेखे मृदुल्लेखे